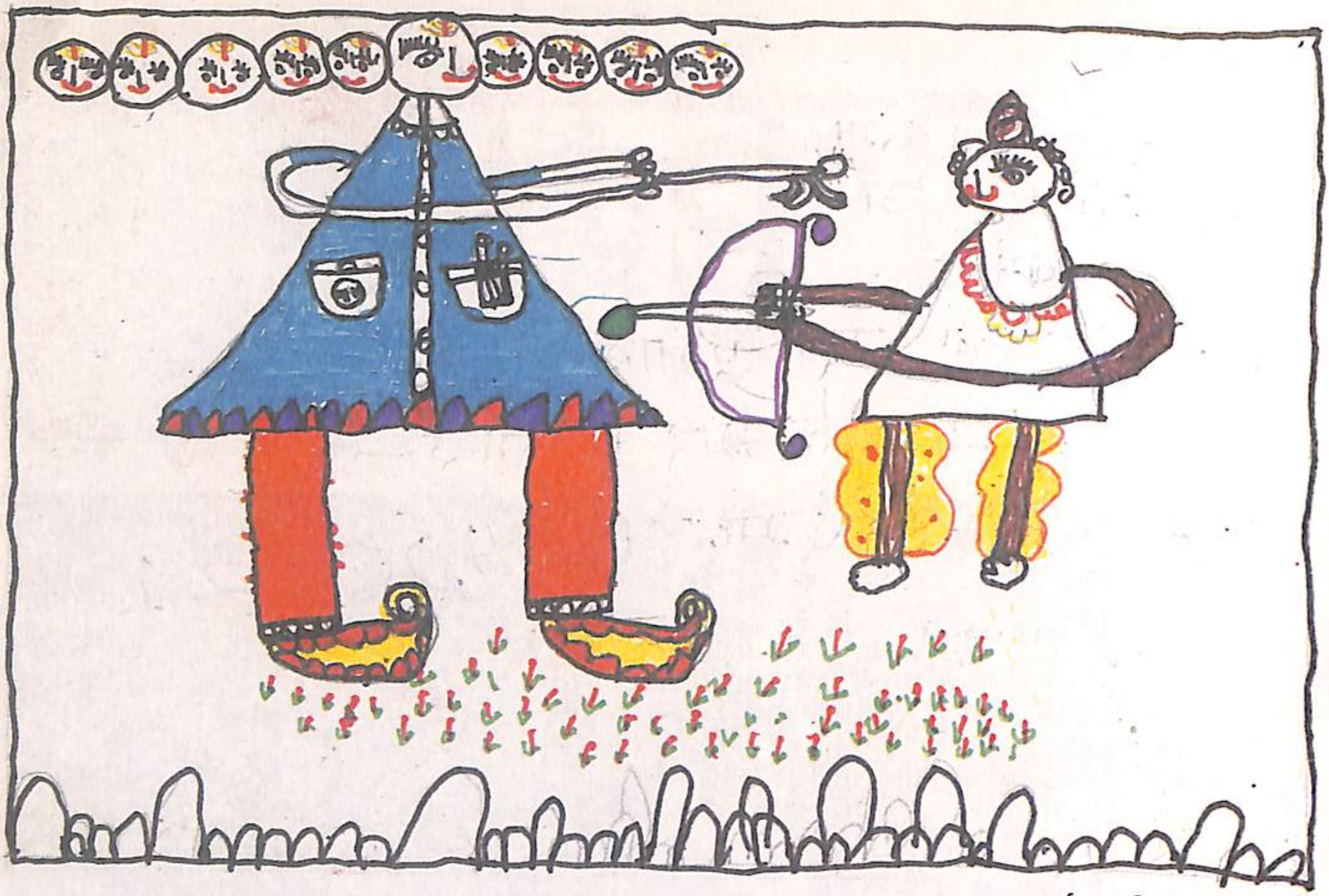
चकमक

अक्टूबर, 1999 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00



चहचहाती चिड़ियाँ



वन्दना वर्मा, दूसरी, भिलाई, म.प्र.



अथर्व शुक्ल, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

अक्टूबर, 1999 के 169वें अंक में







मनभावन कविताएँ

मेरा पन्ना



रोचक श्रृंखला

हर बार की तरह

और भी बहुत कुछ

आवरण : पीले रंग के पेट वाली चिड़िया नाम है शक्करखोरा : बागीचे का ज़ेवर मानी जाने वाली यह चिड़िया फूलों का रस पीती है। यह शाखाओं पर झूलता घोंसला बनाती हैं।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

हर साल बरसात में देश के कुछ इलाके बाढ़ से प्रभावित होते हैं। वहाँ के रहवासियों का जीवन इन दिनों में बुरी तरह अस्त-व्यस्त होता है। हर साल इन इलाकों के लिए नई-नई योजनाएँ बनती हैं, नई-नई घोषणाएँ होती हैं। पर नतीज़ा वही, नौ दिन चले अढ़ाई कोस !

मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी आमतौर पर भारी बरसात में भी शांत रहती है, पर इस बार वह भी अपने किनारे बसे रहवासियों के लिए भयंकर बाढ़ लेकर आई। इसमें सबसे अधिक प्रभावित हुआ - होशंगाबाद जिला। उसके आस-पास के ज़िले भी बाढ़ की चपेट में आने से बचे नहीं।

पूरी स्थिति पर नज़र डालने से एक बात साफ नज़र आती है। वास्तव में यह बाढ़ मौसम के बिगड़ने से नहीं बल्कि प्राकृतिक संसाधनों के कुप्रबंध की वजह से आई।

नर्मदा तथा उसकी सहायक नदियों पर बने और बन रहे बड़े बाँध पिछले कई सालों से विवाद में हैं।

इस बाढ़ के लिए नर्मदा पर बने बरगी बाँध, सहायक नदी बारना तथा तवा पर बने बाँधों से छोड़ा गया पानी ज़िम्मेदार है। निश्चित ही पानी छोड़ना ज़रुरी भी रहा होगा। क्योंकि वे लबालब भर चुके होंगे।

कहा जाता है कि बाँध इसलिए बनाए जाते हैं ताकि उसमें जमा होने वाले पानी से खेतों की सिंचाई की जा सके, पीने का पानी उपलब्ध कराया जा सके। लेकिन अगर यही बाँध लोगों की तबाही के कारण बनें, तो वे भला किस काम के?

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-15 अंक-4 अक्टूबर, 1999

सम्पादन	**वितरण**
विनोद रायना	कमल सिंह
राजेश उत्साही	मनोज निगम
कविता सुरेश	अशोक रोकड़े
टुलटुल विस्वास	**सहयोग**
विज्ञान परामर्श	राकेश खत्री
सुशील जोशी	सुशील शुक्ला

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।





चिड़िया आई

चिड़िया आई, चिड़िया आई
चिड़िया उड़कर जाएगी
चिड़िया आई, चिड़िया आई
चिड़िया दाना खाएगी

चिड़िया आई, चिड़िया आई
चिड़िया गाना गाती है
चिड़िया आई, चिड़िया आई
उड़ करके क्यों जाती है।



● डॉ. श्रीप्रसाद
● चित्र : अर्चना मिश्रा

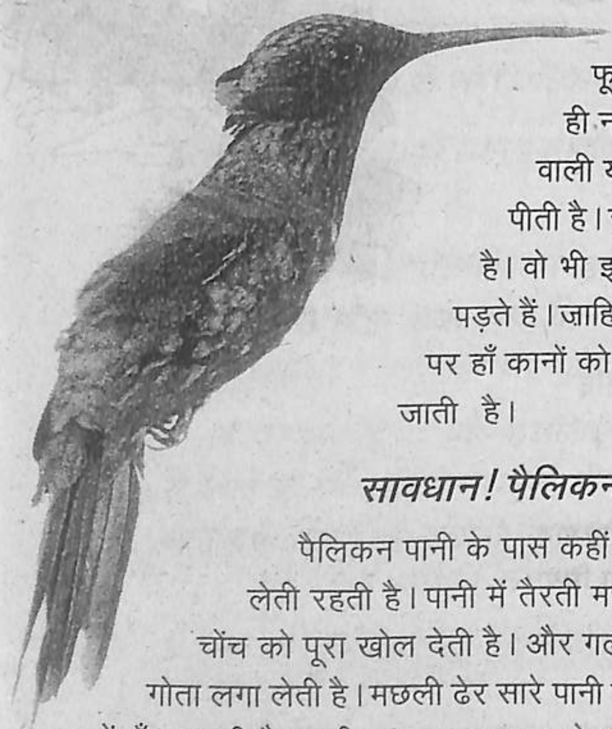


चहचहा रही हैं चिड़ियाँ
चहक रही है गली गली

प्रस्तुति : शशि सबलोक

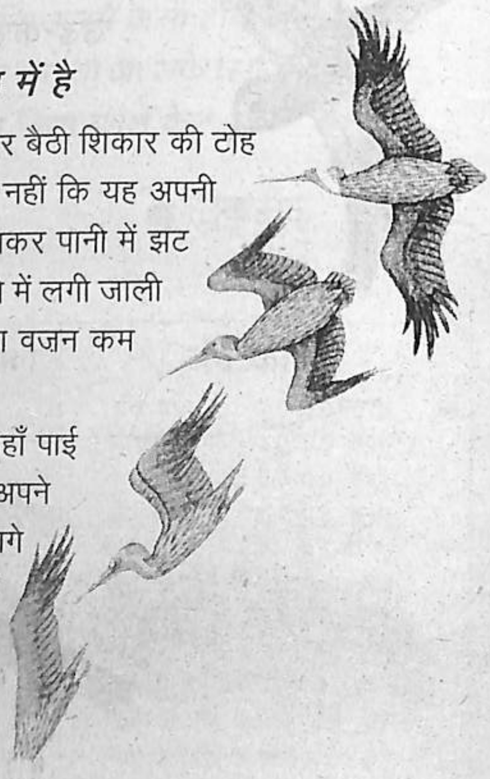
जैसे हमारे गाने की वजह कई हैं वैसे ही चिड़ियों के चहचहाने के कारण भी बहुतेरे हैं– कभी अपने नर साथी को आकर्षित करना मकसद होता है तो कभी अपनी सल्तनत से दूर रहने की चेतावनी देना। अक्सर चिड़ियाँ एक ही जगह पर साथ-साथ रहती हैं। और जब सुबह-सुबह वे सब साथ मिलकर चहचहाती हैं तो उनका स्वर सप्तम पार कर कहीं अष्टम, नवम ढूँढने लगता है।

मिलते हैं कुछ आस-पास और कुछ दूर-दराज़ की चिड़ियों से।



गुनगुनाती मरमर

फूलों के मीठे पराग के खरीददार सिर्फ मधुमक्खियाँ और भौंरे ही नहीं हैं। चिड़ियों का भी यह पसंदीदा खाना है। नीले काले रंगों वाली यह नन्ही-सी चिड़िया अपनी लम्बी पैनी चोंच से फूलों का रस पीती है। रस पीते वक्त यह चिड़िया फूलों पर लगातार मण्डराती रहती है। वो भी इतनी तेज़ की एक सेकण्ड में उसे 50 बार पंख फड़फड़ाने पड़ते हैं। ज़ाहिर है इतनी तेज़ी को देख पाना आँखों के बस की तो बात नहीं। पर हाँ कानों को यह तेज़ फड़फड़ाहट, गुनगुनाहट के रूप में ज़रूर 'दिख' जाती है।



सावधान! पैलिकन शिकार के मूड में है

पैलिकन पानी के पास कहीं पत्थर या चट्टान पर बैठी शिकार की टोह लेती रहती है। पानी में तैरती मछली पर नज़र पड़ी नहीं कि यह अपनी चोंच को पूरा खोल देती है। और गले की थैली को फुलाकर पानी में झट गोता लगा लेती है। मछली ढेर सारे पानी के साथ उसकी थैली में लगी जाली में फँस जाती है। पानी का वज़न इतना होता है कि खुद पक्षी का वज़न कम पड़ जाए।

यह तो हुई विदेशों में पाई जाने वाली पैलिकन की बात। हमारे यहाँ पाई जाने वाली ग्रे-पैलिकन का अंदाज कुछ अलग है। पैलिकन का झुण्ड अपने विशाल पंखों को फड़फड़ाते हुए अर्ध-गोलाकार आकृति में तैरते हुए आगे बढ़ता है। तेज़ फड़फड़ाहट से मछलियाँ पानी में ऊपर की ओर भागती हैं और उनके जाल जैसे पंखों में फँस जाती हैं। और अगले ही पल उनकी भारी चपटी चोंच के ज़रिए उनके शरीर में प्रवेश पा जाती हैं। बड़ा आकार होने के बावजूद ये पानी में आसानी से तैर पाती हैं।

फाख्ता पीती कैसे है



फाख्ता की पैनी नोंक सिर्फ बीजों और पत्तियों को चट कर जाने के लिए ही नहीं होती। कभी-कभार इसका इस्तेमाल स्ट्रॉ की तरह पानी गड़प कर जाने के लिए भी होता है। कबूतर या मैना के आकार की यह चिड़िया जोड़े या टोलियों में खुले देहाती क्षेत्रों और बैलगाड़ी के रास्तों के आसपास बैठी दिख जाती है। हाँ, एक बात और यह वही पक्षी है जिसे 'शान्ति का दूत' नाम से जाना जाता है।



मोर की उल्टी चाल

सुन्दर सजीला मोर हमें तो यूँ ही बहुत भाता है पर अपनी मोरनी को आकर्षित करने के लिए उसे पूरा तयशुदा ड्रामा पेश करना पड़ता है। वह अपने सुन्दर सजीले पंखों को फैलाकर मोरनी की तरफ पीठकर खड़ा हो जाता है। फिर एक-एक कदम पीछे की ओर रखते हुए मोरनी की तरफ बढ़ता है। इसके बाद वह घूम कर अपने चटख रंगों वाले चमकीले पंखों की अनुपम छटा बिखेरता है।



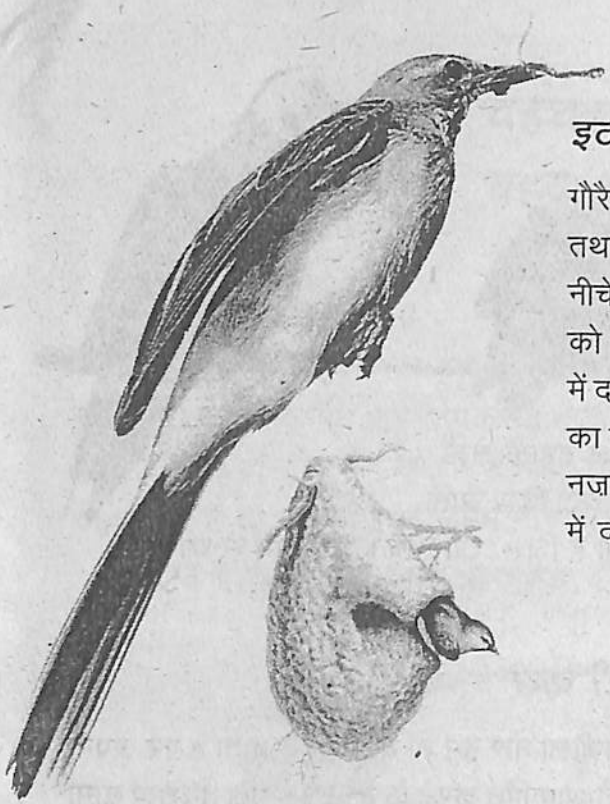
सारस के सिर पर ताज

इस काले, सिरवाले सारस के सिर पर पंखों के ताज की शान सचमुच निराली है। ताज के पंखों का रंग भले ही भूसे जैसा हो पर इस सारस का 'ब्लैक क्राउण्ड क्रेन' नाम तो इसके काले सिर की वजह से ही पड़ा।

बूझो तो जानें की अण्डे कहाँ हैं



एम्परर (बादशाह) पेंग्विन यहाँ से बहुत-बहुत दूर अंटार्टिका का रहवासी है। जहाँ चारों तरफ बर्फ ही बर्फ हो, वहाँ अण्डे सेना वैसे ही मुश्किल काम है। और ऐसे में अगर मादा अण्डे देकर खाना-पानी की तलाश में चल दे तो...। ऐसी हालत में अण्डे गरम रखने की जिम्मेदारी नर बादशाह की हो जाती है। जिसे वह बखूबी निभाता है। वह पहले अण्डों को और बाद में बच्चों को अपने पंजों पर बैठाकर गर्माहट देता है।



इठलाती खंजन

गौरैय्या के आकार की लम्बी दुम वाली, दुबली पतली खंजन खेतों तथा चारागाहों में अक्सर नज़र आ जाती है। यह अपनी दुम ऊपर-नीचे करती, कूदती-फाँदती दिखाई पड़ती है। हवा में उड़ते कीड़ों को पकड़ने के लिए ये हवा में उछलती है और उन्हें अपनी चोंच में दबा लेती है। कुछ खंजन झरनों और झीलों के किनारे बैठ शिकार का इन्तज़ार करती रहती हैं। और जैसे ही पानी में तैरते कीड़ों पर नज़र पड़ती है बिजली की तेज़ी से उन्हें अपनी लम्बी, पैनी चोंच में दबा लेती हैं।



सिर नीचे और शिकार पेट में

लम्बी पतली टांगें, लम्बी सुराहीदार गर्दन.. हंस का इतना ही परिचय शायद अधूरा है। असली खासियत तो इसकी गर्दन की मजबूत निगलने वाली मांसपेशियों में है जो इसे बिना सिर उठाए मछली को गप कर जाने का गुण प्रदान करती है। इसके अलावा इसकी घुमावदार चम्मचनुमा चोंच भी एकदम अलग है। हंस अपने मुँह को पानी में डुबाए खड़े रहते हैंऔर फिर अपनी चोंच में मिट्टी समेत कीड़ों को भर लेते हैं। थोड़ी देर बाद कीड़े पेट में और मिट्टी बाहर।

क्या चुगती रहती है ऑक्सपेकर

मैदानों पर चरने वाली गाय, भैंसों को मक्खियों से होने वाली झुंझलाहट को सहज ही समझा जा सकता है। गाएँ, भैंसें चरती भी जाती हैं और पूँछ से मक्खियों को कुछ हद तक उड़ाती भी जाती हैं। ऐसे में अगर कोई चिड़िया इन परेशान करने वाली मक्खियों व चीचड़ों को चटकर उन्हें राहत पहुँचाए तो कौन उसे अपनी पीठ पर बैठने का आमन्त्रण नहीं देना चाहेगा।



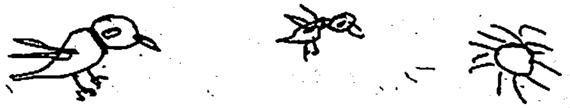
ऑक्सपेकर ऐसी ही एक चिड़िया है। हमारे यहाँ यह चिड़िया नहीं होती, लेकिन हमारे देश में इस काम को बखूबी अंजाम देती हैं कई और चिड़ियाँ। बड़े ठाठ हैं इनके, सवारी तो मिलती ही है साथ में खाना मुफ्त।

* * चित्र एवं जानकारी डोरलिंग किंगस्ले बुक ऑफ अमेज़िंग एनिमल फैक्ट्स से साभार

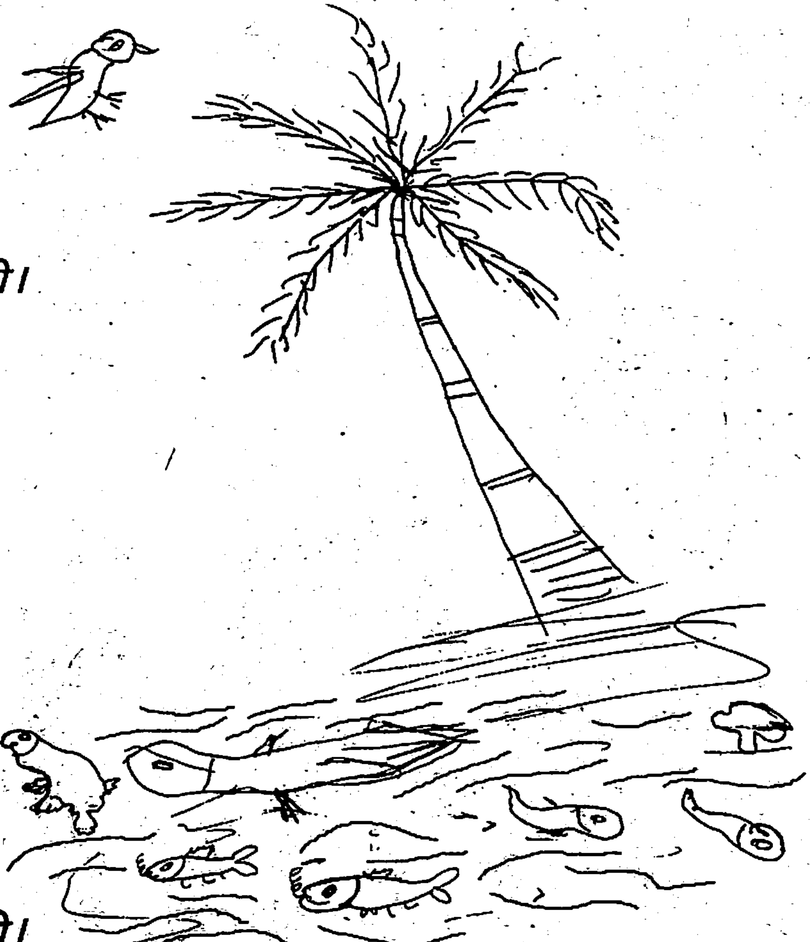
बहुत पिटाई हुई

एक दिन मैं और मेरे दोस्त गेंद खेल रहे थे। मेरा नाम जीतू और मेरे दोस्त अरविन्द और घनश्याम। गेंद खेलने में बार-बार मेरे दोस्तों पर दाम पड़ रहा था। परन्तु मुझ पर दाम नहीं पड़ रहा था। तो मैं हैरान था। लेकिन अचानक मेरी मम्मी आ गई। तो हम लोग जंगल के लिए भाग गए। वहाँ हमने पीलू खाए। पीलू खाने से मेरी जीभ फट गई। फिर मैंने गुरसेमई खाईं तो मेरी जीभ ठीक हो गई। तीन चार दिन बाद फिर गेंद खेली तो मेरी मम्मी ने बहुत पिटाई लगाई। फिर मैंने गेंद खेलना बन्द कर दी। और न मैं कभी जंगल में पीलू खाने जाता हूँ।

● जीतू, पंचमपुरा, मुरैना, म.प्र.



चिड़िया रानी



चिड़िया रानी बड़ी सयानी,
करती दिन भर अपनी मनमानी।

रात से पहले सो जाती है,
सुबह से पहले जग जाती है।

दाना चुगने सुबह निकलती,
शाम से पहले आ जाती है।

आसमान में वह उड़-उड़कर
यह संदेश पहुँचाती है।

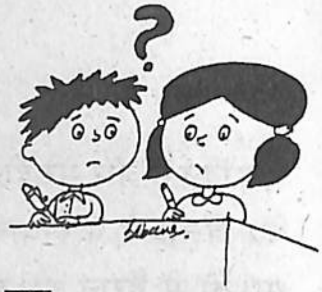
सबका मन बहलाने वाली,
यह है सारे जग की रानी।

चिड़िया रानी बड़ी सयानी,
करती दिन भर अपनी मनमानी।

● मनोज कुमार, तीसरी, हाजीपुर, बिहार

● अनीता चौधरी, दिगवाड़, रायसेन, म.प्र.

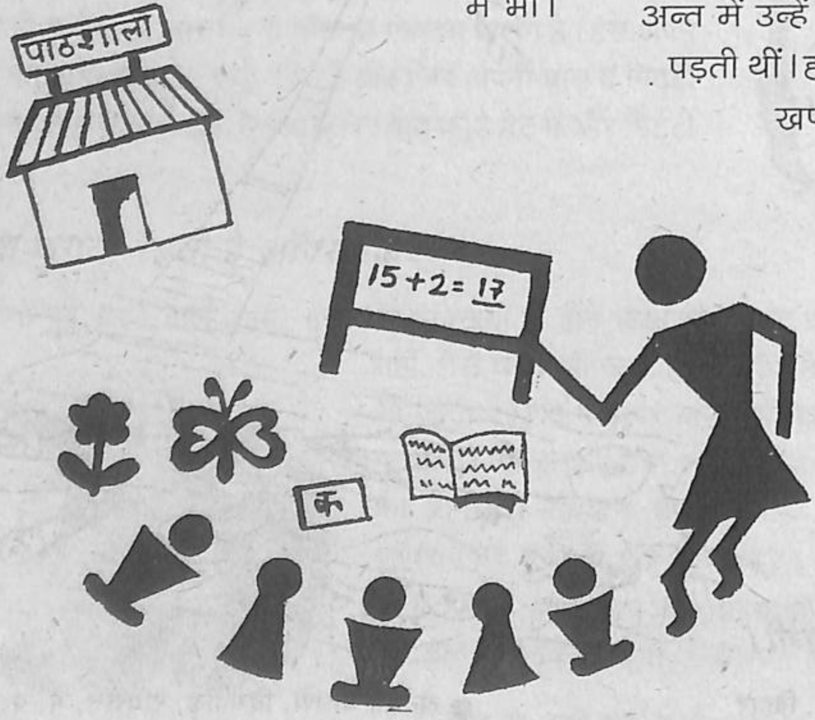
हमारे शिक्षक : 13



यह श्रृंखला पिछले साल सितम्बर में शुरू की गई थी। इसमें कई लोगों ने अपने स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें लिखीं। तुम्हें यह श्रृंखला कैसी लग रही है? क्या तुम इसके बारे में कोई सुझाव देना चाहोगे? तुम्हारे पत्रों का इन्तज़ार रहेगा। और हाँ इसके साथ ही तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें। इस बार केसला, ज़िला होशंगाबाद की आयशा ने अपने शिक्षकों के बारे में लिखा है, तुम भी पढ़ो।

जल्दबाज़ वर्मा सर

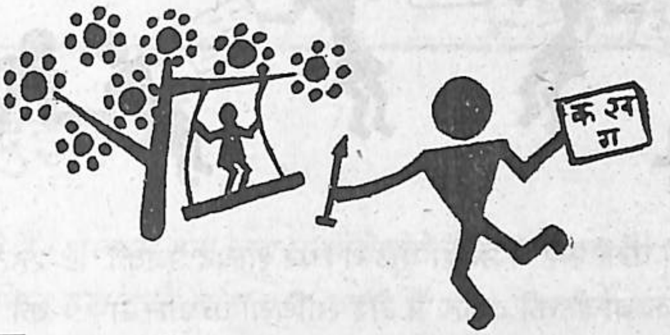
मैं तब दसवीं में थी। गणित और संस्कृत मेरे पसंदीदा विषय थे। सारे दिन गणित के पीरियड का जैसे इंतज़ार ही होता था। द्विवेदी सर हमें गणित पढ़ाते थे। जैसे वो मुझे प्यार करते थे, मैं भी उन्हें, अपने सारे शिक्षकों में सबसे ज़्यादा पसंद करती थी। छमाही परीक्षा में गणित और बायलॉजी में मेरे नंबर सबसे ज़्यादा आए थे। कक्षा में भी और ब्लॉक में भी।



द्विवेदी सर की बातों में ज़रा सी हकलाहट और तुतलाहट शामिल होती थी। यानि ज़बान उतनी साफ नहीं थी। पर एक बार यदि इनकी बातों में बारीकियाँ पकड़ लो तो सारी बातें आसानी से समझ में आ जाती थीं।

कक्षा में एक-एक बच्चे को पूरी तरह समझ में आने तक द्विवेदी सर पूरी कोशिशों के साथ पढ़ाते थे। शायद एक यह वजह थी कि साल के अन्त में उन्हें अक्सर अतिरिक्त कक्षाएँ लेनी पड़ती थीं। हमारे स्कूल में दसवीं कक्षा के दो खण्ड थे। खण्ड 'अ' और खण्ड 'ब'। मैं खण्ड 'ब' में थी। खण्ड 'अ' के बच्चों को गणित पढ़ाने के लिए वर्मा सर नियुक्त थे। वर्मा सर हमेशा बड़ी जल्दी में होते थे। फिर वो जल्दी चाहे चलने, बात करने में हो या फिर पढ़ाने या पीटने में हो। कक्षा में से भी हमने उन्हें जल्दी में जाते, निकलते ही देखा।

दसवीं कक्षा की खण्ड 'अ' और खण्ड 'ब' के बीच एक ही दीवार थी। इसलिए खण्ड 'अ' में गणित के पीरियड में वर्मा सर की गुस्से भरी आवाज़ और मुक्कों, चाँटों की साफ ध्वनि नित्य ही हमारी कक्षा तक पहुँचती थी। गणित का पीरियड वहाँ होता था और हमारी कक्षा में अनजाने ही एक सन्नाटा और सनसनी छा जाती। उन आवाज़ों को हम जितना सुनते उतना ही हम द्विवेदी सर के धैर्य, शांत स्वभाव और प्रेमल व्यवहार के लिए उन्हें और अपनी किस्मत को सराहते। द्विवेदी सर के गुस्से की कल्पना भी जैसे हमारे लिए असम्भव थी। हमने उन्हें हमेशा मुस्कुराते, गुनगुनाते ही देखा था। हाँ, मुझे यह बिल्कुल अच्छी तरह याद है।



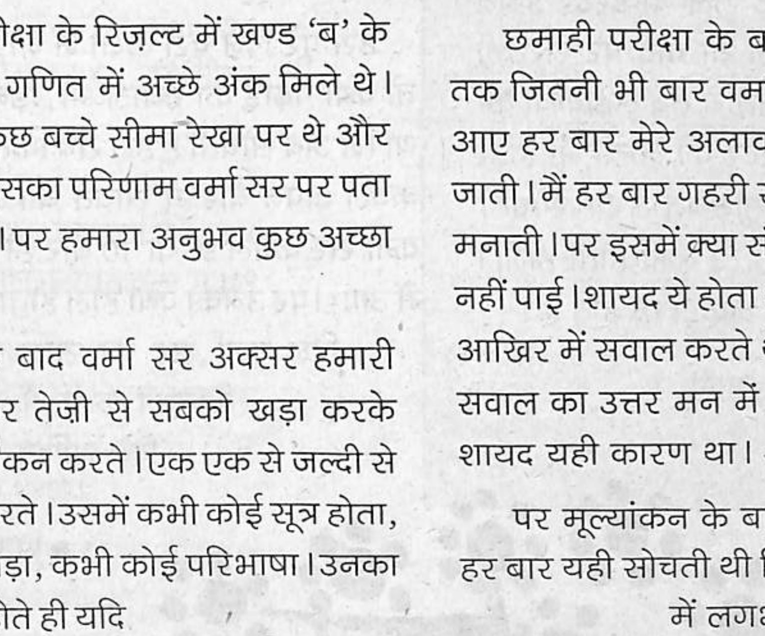
छमाही परीक्षा के रिज़ल्ट में खण्ड 'ब' के सभी बच्चों को गणित में अच्छे अंक मिले थे। खण्ड 'अ' में कुछ बच्चे सीमा रेखा पर थे और कई फेल भी। इसका परिणाम वर्मा सर पर पता नहीं क्या हुआ। पर हमारा अनुभव कुछ अच्छा नहीं रहा।

छमाही के बाद वर्मा सर अक्सर हमारी कक्षा में आकर तेज़ी से सबको खड़ा करके मौखिक मूल्यांकन करते। एक एक से जल्दी से कोई सवाल करते। उसमें कभी कोई सूत्र होता, कभी कोई पहाड़ा, कभी कोई परिभाषा। उनका सवाल खत्म होते ही यदि विद्यार्थी के होंठ नहीं हिले, तो उस पर घूँसों, मुक्कों की बरसात हो जाती थी। जो सही उत्तर दे दे, उसे बिठा दिया जाता।

हर मूल्यांकन के अंत में यह सुनने को मिलता कि, "पढ़ाया तो कुछ है नहीं, बस परीक्षा में नकल करना सिखाया है।" इस मौखिक मूल्यांकन के खत्म होने के आधे घंटे बाद तक पूरी कक्षा को खड़ा रखा जाता।

छमाही परीक्षा के बाद से वार्षिक परीक्षा तक जितनी भी बार वर्मा सर हमारी कक्षा में आए हर बार मेरे अलावा पूरी कक्षा खड़ी रह जाती। मैं हर बार गहरी साँस छोड़ती, गनीमत मनाती। पर इसमें क्या संयोग था मैं कभी जान नहीं पाई। शायद ये होता था कि वर्मा सर मुझसे आखिर में सवाल करते थे और तब तक मैं हर सवाल का उत्तर मन में उतार चुकी होती थी। शायद यही कारण था।

पर मूल्यांकन के बाद पूरे आधे घंटे में मैं हर बार यही सोचती थी कि बाकी खड़े साथियों में लगभग सारे ही साथी उन सवालों के जवाब दे सकते थे





जो वर्मा सर ने उनसे पूछे थे। पर शायद उनकी जल्दबाज़ी की वजह से मेरे साथियों के मन में हड़बड़ी, डर और पिटने की दहशत समा जाती होगी। मेरा मन करता था कि अब मैं खड़ी होकर उन सभी सवालों को अपने साथियों से दोहराकर पूछूँ। वर्मा सर हमेशा उस समय हमारी कक्षा में आते जब द्विवेदी सर स्कूल में नहीं होते थे।

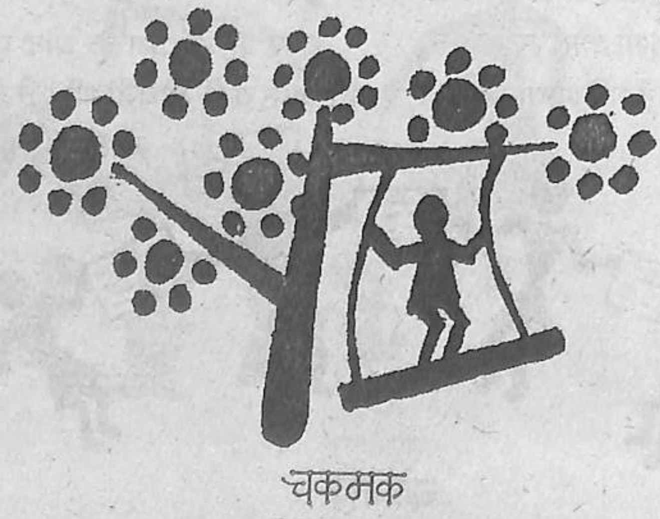
पर हाँ, एक बात थी। वर्मा सर लड़कियों पर हाथ नहीं उठाते थे। फुट रूल या डस्टर उठाते थे। जब लड़कों के गाल या पीठ पर सर की उंगलियों के निशान बनते थे तब लड़कियों की हथेलियों पर स्केल, डस्टर की लाली भी होती थी। फिर भी मैं बड़ी मासूमियत से यह सोचती थी कि वर्मा सर में ज़रा तो नर्मी होती होगी। डस्टर, स्केल तो पक्की लकड़ी के होते हैं।

जिस दिन वर्मा सर हमारी कक्षा में आते उस सारे दिन मेरे कान लड़कों के झुंड की ओर रहते, जहाँ उन्हें रास्ते में छुपकर पत्थर मारने की प्लानिंग और उनके लिए ढेर-सी गंदी गालियों की बौछारें सुनाई पड़ती थीं। ऐसे ही लड़कियों के झुंडों से बद्दुआएँ सुनाई देतीं, कि सर को घर जाते समय बस में सीट न मिले। उन्हें पूरे एक घंटे तक खड़े रहना पड़े। उनके अपने बच्चे को गणित में शून्य ही आना चाहिए वगैरह.. वगैरह। मुझे यह सब सुनना अच्छा लगता था। जैसे मेरे गुस्से को मूर्त रूप मिल रहा हो।

उस पूरे दिन पूरी कक्षा में गणित की पढ़ाई तो क्या पढ़ाई का ख्याल भी उड़न छू हो जाता था। मैं अब सोचती हूँ हम सब कितने स्वार्थी थे। केवल अपने बारे में सोचते थे। छह महीने में वर्मा सर केवल 9 या 10 बार ही हमारी कक्षा में आए। पर उनका क्या हाल होता होगा जो हर दिन वर्मा सर का सामना करते थे? जिनकी कक्षा में वर्मा सर हर दिन गणित पढ़ाते थे?

● आयशा

● चित्र : शहला ख़ान





जादुई कार्ड

कभी-कभी कई अजूबी बातें सामने आती हैं। शुरू में हम जब उन्हें देखते हैं तो लगता है . . 'नहीं . . ऐसा कैसे हो सकता है?' और फिर हम उन्हें बार-बार करते हैं . . . समझते हैं।

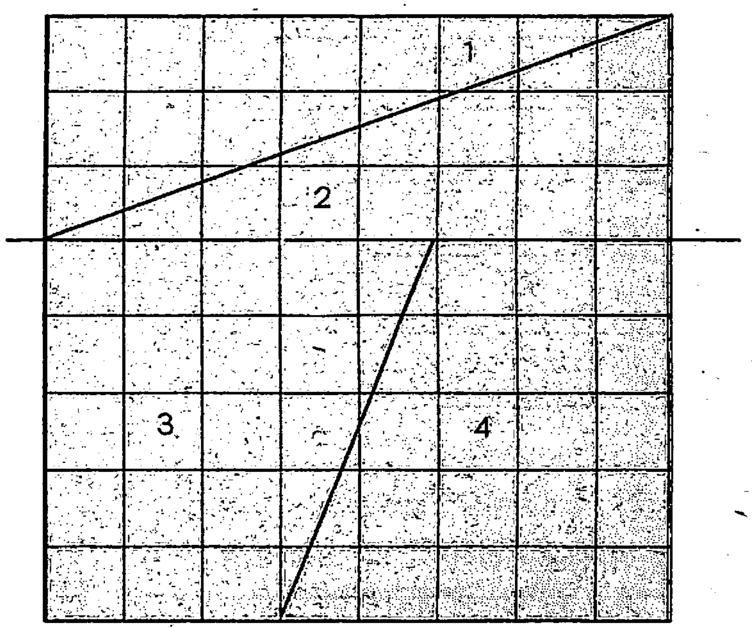
जैसे यदि कोई तुमसे कहे कि 8 = 9 होता है। और यह तुम्हें करके भी दिखा दे। हमें यह तो मालूम है कि यह बात गलत है। लेकिन फिर क्या चक्कर है? इस तरह के सवालों में मुख्य बात होती है, यह पता करना कि गड़बड़ कहाँ है?

ऐसी ही एक माथापच्ची तुम्हारे लिए। करके देखना और बताना कि कहाँ गड़बड़ है।

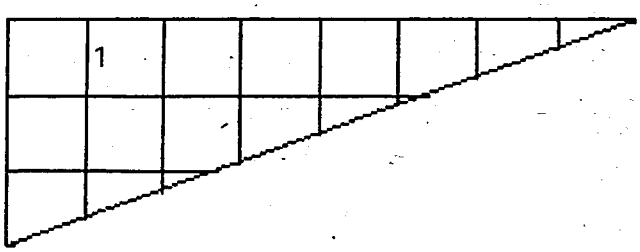
एक कोरे काग़ज़ पर 8 X 8 वर्ग सेंटीमीटर की नाप का एक वर्ग बनाओ। इस वर्ग में 64 छोटे वर्ग बनाओ। यह हर खाना 1 सेंटीमीटर X 1 सेंटीमीटर का होगा।

अब यह तुम्हारा 8 X 8 = 64 खानों का वर्ग है। क्या तुम इस वर्ग को 13 X 5 = 65 खानों वाला आयत बना सकते हो?

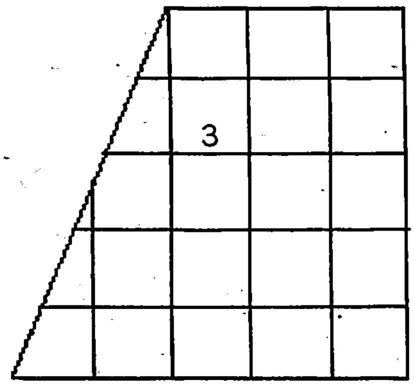
कोशिश करके देख लो। बन जाए तब तो बात ही क्या! और न बने तो फिर इस तरह करके देखो।



चित्र में दिखाए अनुसार एक और 8 X 8 वर्ग सेटीमीटर के वर्ग को चार भागों में काट लो। कटे हुए इन हिस्सों को 1, 2, 3, 4 नम्बर दे दो। नम्बर देते समय ध्यान रखना जिस प्रकार चित्र में बताया है उसी तरह हों।

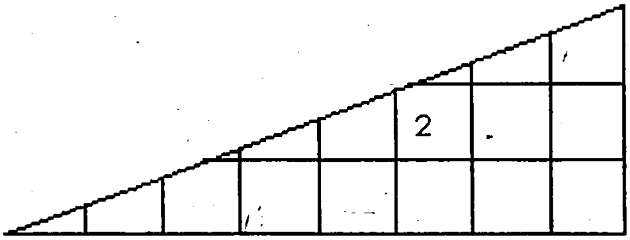


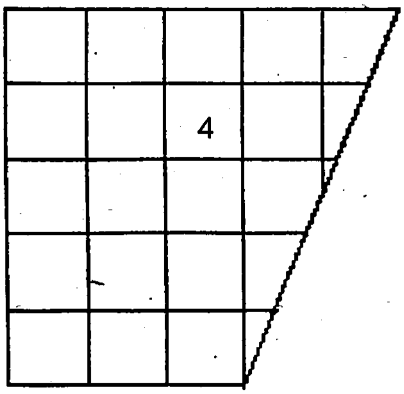
अब इन्हें 3, 2 और 1, 4 के रूप में जमाओ। आयताकार आकृति बनेगी।

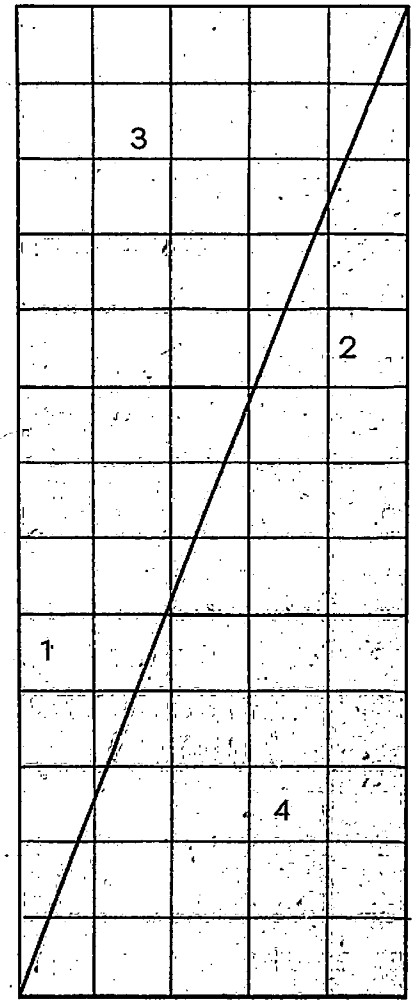


गिनकर देखो कितने खाने हैं!

अगर तुम ठीक से इसे कर लोगे तो वर्ग से आयत बन जाएगा। अब सवाल यह है कि यह हुआ कैसे?







तुम्हारे वर्ग का क्षेत्रफल पहले 8 X 8 = 64 वर्ग सेंटीमीटर था। अब उसी कागज़ का आयत बनाने पर उसका क्षेत्रफल 13 X 5 = 65 वर्ग सेंटीमीटर कैसे हो गया? क्या एक ही कागज़ के दो क्षेत्रफल हो सकते हैं? नहीं न। तो फिर पेंच कहाँ है?

तुममें से कुछ लोग तो अब तक समझ गए होंगे, लेकिन जो नहीं समझ पाए वो एक बार फिर से इसे करके देखें।

वर्ग पहेली - 97 का हल

प	ग	डं	डी		ख	ता	वा	र
रे			ल		रौं		दा	ह
	आ	द	र	सू	च	क		मो
अ		कि		म		म		क
फ	रि	या	द		अ	से	स	र
रा		नू		ब		क		म
त		सी	मा	ति	क्र	म	ण	
फ	क		कू		मां			घ
री	ह	र्स	ल		क	बू	त	र

इस वर्ग पहेली का एक भी सही हल हमें प्राप्त नहीं हुआ।

टिमटिम

विजय गुप्त



जंगल में एक जुगनू था – टिमटिम। वह कोई बड़ा काम करना चाहता था लेकिन बहुत छोटा था बेचारा। सभी जीव जन्तु उससे बड़े और भारी थे। कोई उसकी सुनता ही नहीं था। सभी उसका मज़ाक उड़ाते। मोटा भालू कहता– ''तेरे टिमटिमाने से क्या होगा, टिमटिम ?''

वह कहता ''काका, तारे भी तो टिमटिमाते हैं और राही को रास्ता बताते हैं।''

गुनगुन भौंरा जोर से हँसता और अपनी नाक बजाता, ''अरे, टिमटिम तारों के पास बहुत बड़ी बैटरी है। तेरी बैटरी तो बहुत जल्दी डाउन हो जाती है।''

वह गुस्से से कहता, ''लेकिन चाचा मेरी जैसी हरी रोशनी तो तारों के पास भी नहीं।''

कनखजूरा अपने कान खुजाता और उसे चिढ़ाता, ''अरे हरी बत्ती, डींग मत हाँक, कुछ करके दिखा!''

क्या दिखाए टिमटिम ? क्या करे टिमटिम ? कुछ करने कराने की सोच रहा था टिमटिम कि जंगल में भगदड़ मच गई। हिरन, बारहसिंगे, चीतल सभी सिर पर पैर रखकर भाग रहे थे। शेर, चीते, भालू भी अपनी गुफाओं में दुबक गए। पत्तों के पीछे टिमटिम ने देखा बहुत सारे आदमी। एक आदमी अनठिकाने गोलियाँ चला रहा था। कुछ के हाथों में लालटेनें थीं। कुछ के हाथों में कुल्हाड़ियाँ थीं। टिमटिम बुरी तरह डर गया।

जिस पेड़ पर टिमटिम छुपा था, वह सरई का खूब ऊँचा और घना पेड़ था। उसी पेड़ पर टिमटिम



के बाबा, दादा, परदादा, लकड़दादा भी रहे थे। भोलू भैंसा तो कहता है कि;" कोई नहीं जानता की सरई दद्दा की उमर क्या है ?" आज उसी सरई दद्दा पर मुसीबत आई थी।

बंदूक वाले आदमी ने सारी लालटेनें आसपास के पेड़ों की डंगालों पर टँगवा दीं। लालटेन की पीली रोशनी में सारे मेड़ थरथराने लगे। झींगुरों ने भी डरकर अपना गाना बंद कर दिया।

टिमटिम ने देखा कि सारे आदमियों ने सरई दद्दा को चारों ओर से घेर लिया। फिर एक के बाद एक कुल्हाड़ी सरई का बदन काटने लगी। सारे जुगनू जान बचाने के लिए बगल वाले पेड़ पर चले गए। बस टिमटिम नहीं गया। सरई दद्दा बुरी तरह घायल हो गए थे। उन्होंने कहा, "टिमटिम बेटा, इस जंगल को बचाने की कोशिश करो।"

"लेकिन दद्दा मैं तो बहुत छोटा-सा हूँ।" टिमटिम ने कहा।

दद्दा की देह आधी कट चुकी थी। दर्द से छटपटाते हुए बोले, "चींटी भी तो छोटी होती है। लेकिन वह हाथी को परेशान कर देती है। महत्व बुद्धि का है। बुद्धि लगाओ बेटा।" इतना कह कर दद्दा जमीन पर गिर पड़े।

इस घटना को बीते कई दिन हो गए। टिमटिम रोज बुद्धि लड़ाता लेकिन कोई जुगत नहीं भिड़ती। थक हार कर सो जाता। एक दिन वह ज़ोर ज़ोर से चमकने लगा। मामला बन गया। उसे पेड़ों को बचाने का एक रास्ता आखिर सूझ ही गया। उसने जंगल के सभी जुगनुओं को इकट्ठा किया और अपनी योजना बताई। सभी तैयार हो गए। जंगल के दूसरे जानवरों ने योजना सुनकर दाँतों तले उंगलियाँ दबा लीं।

एक दिन वही लोग जंगल में फिर आ धमके। उनके जंगल में घुसने की सूचना कठफोड़वा ने ठक्-ठक् कर पुक्का तक पहुँचाई और पुक्का ने पुक्-पुक् कर पूरे जंगल में सूचना पहुँचा दी। टिमटिम अपने हजारों साथियों के साथ वहाँ पहुँच गया। जहाँ वे लोग एक बहुत बड़े शीशम को काटने की तैयारी कर रहे थे। जुगनू ने सियारों और कुत्तों को इशारा किया। वे तेजी से जंगल के बाहरी हिस्से की ओर भाग निकले।

जंगल के इसी बाहरी हिस्से पर जंगल दारोगा धूमकेतू रहते थे। जंगल के चोरों के लिए वह साक्षात यमराज थे। वह ताकत भर जंगल की रक्षा करते थे। लेकिन जब वह पूरब में होते तो चोर पश्चिम में पेड़ काटते। वह उत्तर में होते तो चोर दक्षिण में उत्पात मचाते। अकेले धूमकेतू कहाँ-कहाँ जाते।

सियारों और कुत्तों ने दारोगा के घर के चारों ओर मोर्चा बाँधा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। हुँआ-हुँआ और भौं-भौं के बीच धूमकेतू जाग गए। अपनी बंदूक लेकर

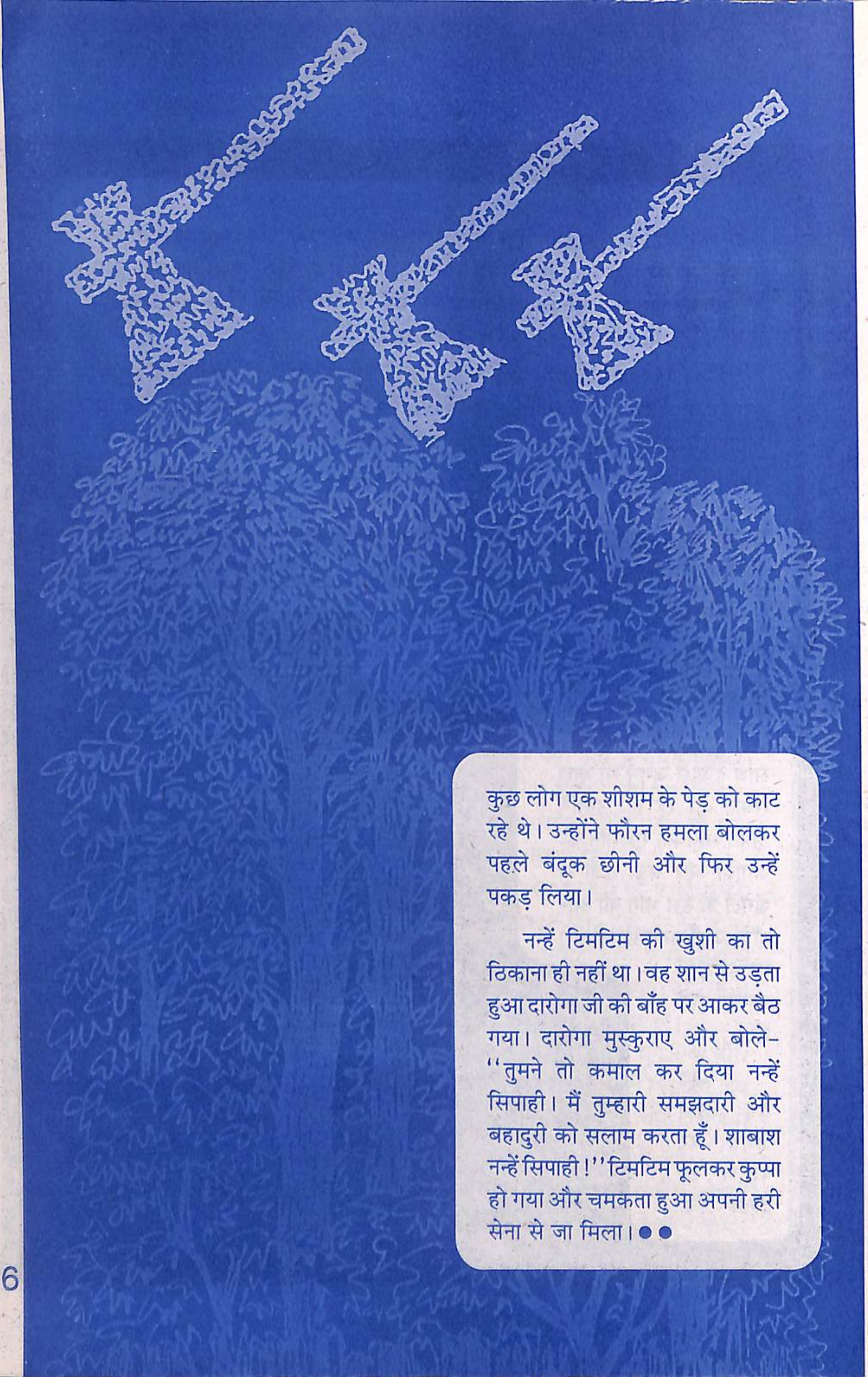
वह बाहर निकले। उन्हें देखकर कुत्ते और सियार चुप हो गए। उनका व्यवहार देखकर धूमकेतू चकित रह गए। जैसे ही वह अन्दर जाने को हुए, फिर हुँआ-हुँआ और भौं-भौं की आवाज़ें होने लगीं। उन्हें लगा जैसे ये जानवर कुछ कहना चाहते हैं। अचानक उन्होंने दूर आसमान में एक अजीब दृश्य देखा।

उन्हें लगा जैसे खूब ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की फुनगियों पर हरे रंग की कुल्हाड़ियाँ चमक रही हैं। वह चौंक गए। उन्होंने आज तक ऐसा दृश्य नहीं देखा था। वह भागकर भीतर से अपनी दूरबीन ले आए। इस दूरबीन से रात में भी देखा जा सकता था। उन्होंने जो देखा उससे वह चकरा गए। जंगल के दक्षिणी कोने पर ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर हज़ारों जुगनुओं ने मिलकर कुल्हाड़ी का रूप बनाया था। वह चकित रह गए। ऐसा तो उन्होंने कभी नहीं देखा था। अरे यह क्या?

धूमकेतू जी ने देखा कि कुल्हाड़ी पीछे की ओर जाती है और बड़ी तेजी से पेड़ की पत्तियों पर गिरती है। ऐसा कई पेड़ों पर हो रहा था। उन्हें लगा जैसे कुत्ते और सियारों के साथ हज़ारों जुगनू भी कुछ संकेत कर रहे हैं। उन्होंने अपने सहायक रामरतन को जगाया और बड़ी तेजी से जंगल के उस भाग की ओर दौड़े, जहाँ जुगनुओं की हरी कुल्हाड़ियाँ चमक रहीं थीं।



जब वह उस जगह पर पहुँचे तो देखा कि



कुछ लोग एक शीशम के पेड़ को काट रहे थे। उन्होंने फौरन हमला बोलकर पहले बंदूक छीनी और फिर उन्हें पकड़ लिया।

नन्हें टिमटिम की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था। वह शान से उड़ता हुआ दारोगा जी की बाँह पर आकर बैठ गया। दारोगा मुस्कुराए और बोले- "तुमने तो कमाल कर दिया नन्हें सिपाही। मैं तुम्हारी समझदारी और बहादुरी को सलाम करता हूँ। शाबाश नन्हें सिपाही!" टिमटिम फूलकर कुप्पा हो गया और चमकता हुआ अपनी हरी सेना से जा मिला। ● ●

● सभी चित्र : मनोज कुलकर्णी



मेरा पन्ना

मैं रुपया हूँ

दिल्ली से मुंबई, मुंबई से मद्रास और मद्रास से अब मैं सीधा यहीं आ रहा हूँ। मेरा जन्म 1996 ईसवी में एक बहुत बड़ी टकसाल में हुआ। टकसाल से मुझे सीधा दिल्ली के एक बैंक में भेजा गया। वहाँ मुंबई के एक गरीब आदमी ने अपने बचत खाते में जमा करवाए गए कुछ रुपयों पर ब्याज के रूप में मुझे लिया। और उस आदमी ने मुझे एक सेठ के पास रख दिया, और उससे कुछ सागान ले लिया।

सेठ मुंबई से मद्रास पहुँच गया। और मद्रास के एक मध्यवर्गीय परिवार से उसने मकान किराए पर लिया। मेरे कुछ भाई रुपयों के साथ मुझे भी दे दिया। फिर उस आदमी ने मुझे अपने किसी मित्र को, रुपयों की तंगी के कारण, पंजाब भेज दिया।

जब उसके मित्र के पास मैं पहुँचा तो उसके मित्र ने मुझे लेखक के पिता से किराने का सामान लेकर बेच दिया। और लेखक ने जब अपने पिता से जेब खर्च के लिए पैसे माँगे तो लेखक के पास मैं पहुँच गया। और लेखक ने मेरा इन्टरव्यू लेकर लिख दिया।

● नकुल कुंद्रा, नवीं, जालंधर, पंजाब

चोरी हुई

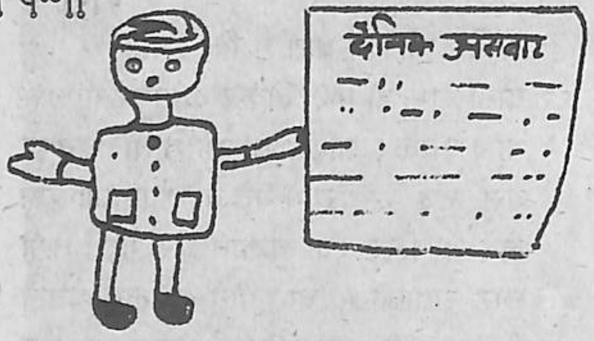
अभी अभी की बात है कि हमारे दोनों मामाजी माल लेकर कानपुर गए थे। माल बेचकर वापिस आ रहे थे तो कानपुर बस स्टेंड पर बस में बैठे बड़े मामाजी पेठा लेने के लिए एक दुकान पर गए। तभी छोटे मामाजी भी चाय पीने के लिए होटल में गए। उसी समय मामाजी का 85 हजार रुपए एवं गरम कपड़ों से भरा सूटकेस चोरी चला गया।

वहाँ से लौटने के बाद बस में देखा तो सूटकेस नहीं था। बड़े मामाजी के होश-हवास उड़ गए और मामाजी बेहोश हो गए। तो छोटे मामाजी झट से डॉक्टर के यहाँ ले गए और झट से दवा खिलाई। लेकिन मामाजी को कुछ पता नहीं रहा कि हम कब घर आ गए। अभी भी हमारे बड़े मामाजी की तबियत खराब है।

● विकास जैन, छठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.



● भानुप्रिया मुजाल्दा, सातवीं, होलीपुरा, धार, म.प्र.



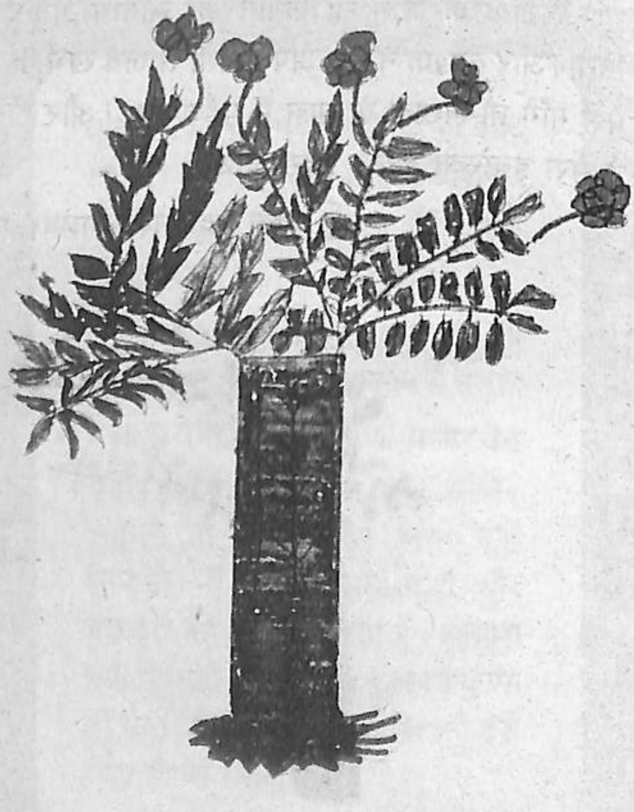
सुबह का अखबार

सुबह-सुबह अखबार है, आया।
ताजी-ताजी खबरें लाया।
नई-नई बात सुनाता।
देश-विदेश की सैर कराता।
सबका ही यह मन बहलाता।
सुबह-सुबह अखबार है आता।

● चित्र और रचना : शुभम काशिव,
आठवीं, हरदा, म. प्र.

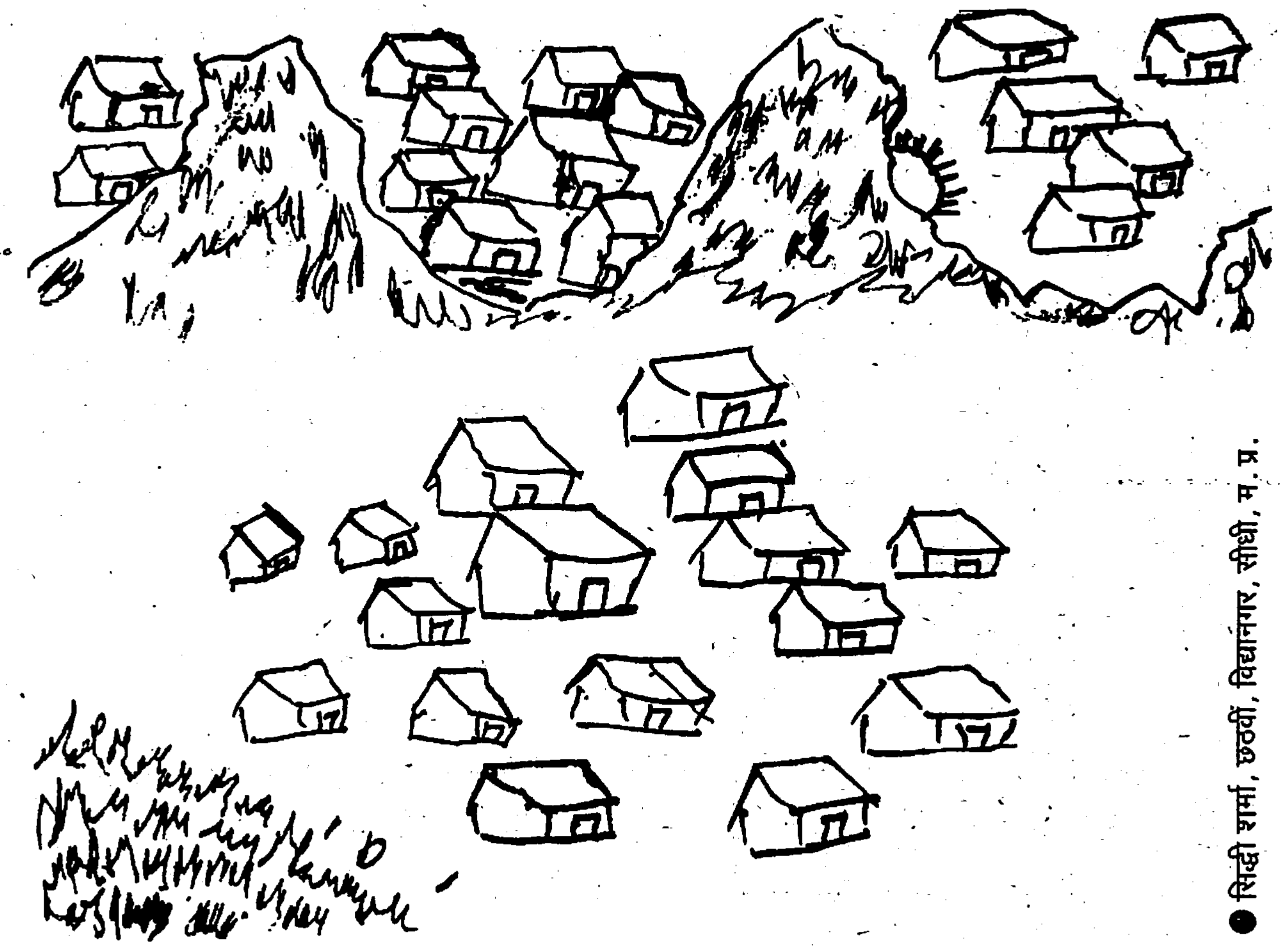
गुलमोहर का पेड़

हमारे आँगन में गुलमोहर का पेड़
वह हम सबको प्यारा लगता है।
वह हम सबको बहुत छाया देता है।
हम सब उसे प्यार करते हैं।
हमारे आँगन में गुलमोहर का पेड़।
वह वायु शुद्ध करता है।
उसके फूल लाल रंग के
हमको बहुत अच्छे लगते हैं।
हम उसके फूलों को बहुत प्यार करते हैं।
हमारे आँगन में गुलमोहर का पेड़।
जब वर्षा आती है
तो हम उसके नीचे बैठते हैं
उसके नीचे पानी नहीं लगता।
जब पानी चला जाता है।
हम उसकी डालियों पर हम झूलते
उसकी डालियों से टपकती बड़ी-बड़ी बूँदें
हम सबको अच्छी लगती हैं।
हमारे आँगन में गुलमोहर का पेड़।



● चित्र और रचना : शाहीन जमशेर तड़वी, जसोंदी, खंडवा, म. प्र.

हम बस्तर गए



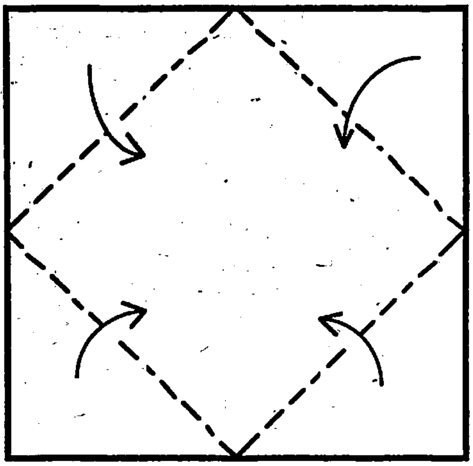
● सिद्धी शर्मा, छठवीं, विद्यानगर, सीधी, म. प्र.

हम अपनी गर्मी की छुट्टी बिताने बस्तर गए। रास्ते में एक जंगल के पास हमारी बस का टायर पंचर हो गया। मेरे साथ मेरा दोस्त रोहित भी था। हम हमारी बस से नीचे उतरे और जंगल की ओर चल पड़े। हम अपनी बस से दूर निकल गए। हमें यह नहीं पता था कि बस्तर के जंगलों में अभी भी आदिवासी रहते हैं। हम एक पेड़ के पास रुक गए। तभी एक तीर हमारे पास आ गिरा। हमने देखा कि दो आदिवासी हमारे सामने खड़े हैं। हमने उसी पल दौड़ना चालू कर दिया। करीब दस मिनट तक हम दौड़ते रहे।

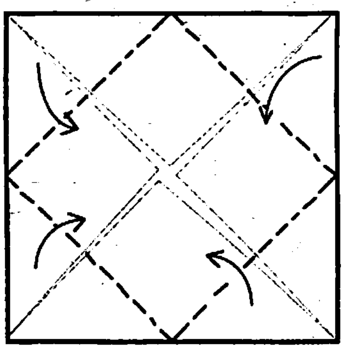
उधर पापा-मम्मी और बस के सभी लोग हमें ढूँढ रहे थे। हम जैसे ही रुके, एक तरफ से आवाज़ आई – 'तोहिद-रोहित'। हमने देखा कि मम्मी हमारी तरफ आ रही थी। हम दौड़कर पापा-मम्मी के पास आ गए।

● तोहिद अली, सातवीं, भोपाल, म. प्र.

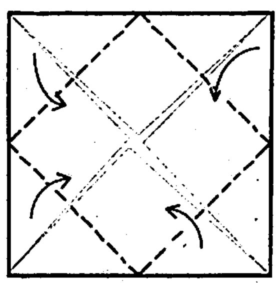
गुलाब का फूल



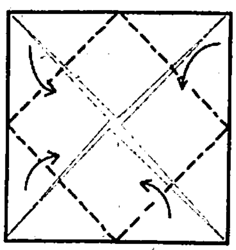
1. एक वर्गाकार कागज़ ले लो। कागज़ थोड़ा बड़ा लेना लगभग 20 सेंटीमीटर लम्बा और 20 सेंटीमीटर चौड़ा। कागज़ रंगीन हो तो अच्छा रहेगा और पतला होना चाहिए, जैसा पतंग का होता है। चित्र में दिखाई टूटी रेखाओं पर से मोड़ लो।



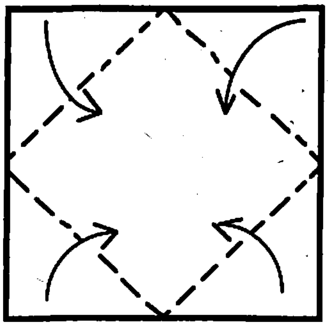
2. चारों किनारों से मोड़ने के बाद कागज़ फिर वर्गाकार हो गया। अब फिर एक बार और टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना लो।



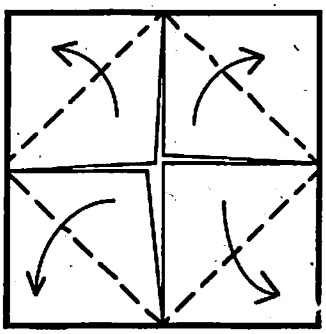
3. फिर एक बार टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना लो।



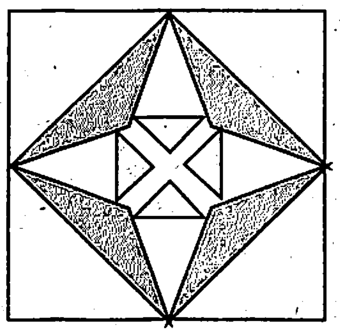
4. एक बार और इसी तरह टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना लो।



5. अब आकृति को पलट लो। पलटने के बाद चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। और फिर से इस आकृति को पलट लो।



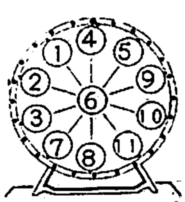
6. अब इस ओर तुम्हें कई सारे कोने दिखेंगे। ये वही कोने हैं जो तुमने चार, पाँच या छह बार मोड़कर इकट्ठे किए हैं। अब एक-एक कोने कोने को बाहर की ओर खोलते जाओ।



7. गुलाब के फूल की पंखुरियों की तरह लगते हैं या नहीं? अब पीछे वाले हिस्से को गोंद से चिपका दो। वहीं पर एक सींक फँसाकर फूल की डंडी भी बना लो। तो कैसा रहा गुलाब का फूल।

माथापच्ची के हल सितम्बर माह के

1. 47 (कार्ड नम्बर 4)
2. 24 रेखाएँ/ दाँते
3. $12^3+1^3=1728+1=1729$ और
   $9^3+10^3=729+1000=1729$
4.



5. रवि की आयु 20 वर्ष है।
7. 1 किलोमीटर की दूरी पर।
8. 1+3+5+7+9=25 और
   2+4+5+6+8=25
   ऐसे और भी कई समूह हो सकते हैं।

गणित की पहेलियाँ
एक – कक्षा चार
दो – न, प, फ, ब
तीन – माह जून

पहेलियाँ



॥ एक ॥

सोमवार को
दादा-दादी
पापा-मम्मी हम।
गुरूवार को
जा पहुँचे थे,
सबके सब दमदम॥
दो दिनों तक
बैठ ट्रेन में,
खायी थीं चमचम।
दोनों दिन के
नाम बताओ,
तुमको जानें हम॥

॥ दो ॥

दक्षिण में
केरल है,
उत्तर में
खड़ा हिमालय
मौन।
पश्चिम में
मुम्बई है,
शेष बची
दिशा भई अब
कौन॥

॥ तीन ॥

पापा लाये
नया कलैंडर,
मम्मी झाँके
उसके अन्दर।
उसमें थी एक
भूल भयंकर,
छपा नहीं था,
माह सितम्बर॥
इसके आगे
कौन महीने,
आते जिनमें
नहीं पसीने॥

// चार //

मम्मी जी ने
चाय बनाई
डाला दूध व पानी।
मीठी-मीठी
उस चाय को,
सुड़ सुड़ पीती रानी॥
चाय बनाई
पर मम्मी ने,
एक चीज़ न डाली।
नाम बताएँ
उस चीज़ का,
सभी बजाएँ ताली॥

// पाँच //

टीचर बोले
कक्षा में
खोलें पन्ना चार।
पर कक्षा में
रामू का,
अद्‌भुत था व्यवहार॥
रामू की
उस पुस्तक में,
नहीं था पन्ना चार।
अगला नम्बर
बतलाओ,
सोचो, हो तैयार॥

// छह //

मैंने कर ली
पक्की जाँच,
खड़े लैन में
लड़के पाँच।
एक रंग है
कमीज का,
नम्बर कौन है
बीच का॥

पहेलियाँ : गोपीचन्द श्रीनागर
चित्र : अम्बुज खरे



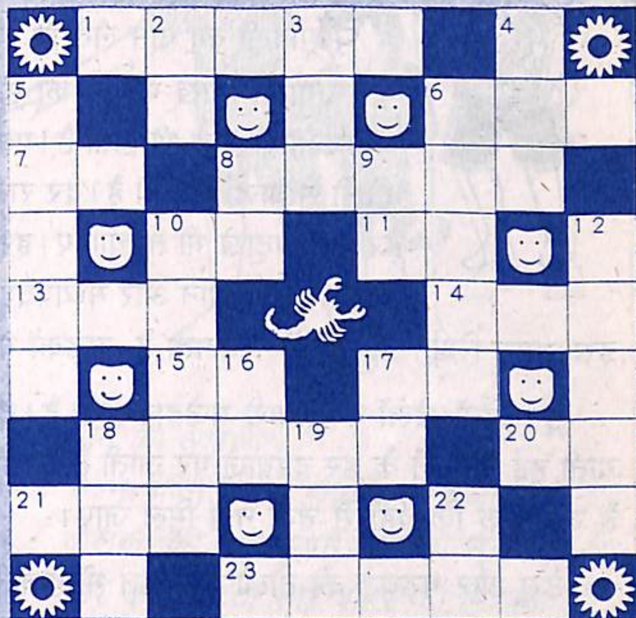
शाम

कर सूरज से कुट्टी
धूप मली मुँह मिट्टी
पीला हुआ उजाला
गुम गई सिट्टी पिट्टी
पश्चिम दिशा सलौनी
खेले आँख मिचौली
पर्वत नदी किनारे
छुप गए पक्षी सारे
निर्मल नीला अम्बर
ओढ़े काला कम्बल
छाया धुँधली काली
वहीं छुपी हरियाली
इमली बरगद पीपल
पल में हो गए ओझल
पलक नींद की पट्टी
आँखों की अब छुट्टी
भैया ढूँढो आओ
या हार मान सो जाओ
सबको कहाँ छुपाया?
कहीं न कुछ भी पाया
आखिर भैया हारे
अपने पैर पसारे
रंग छुपा नयनों में
सैर करें सपनों में

● गिरिजा कुलश्रेष्ठ

● चित्र : फाउंटेन प्रेस की फोटोग्राफी इयरबुक 1993 से साभार

वर्ग पहेली - 99



संकेत : दाएँ से बाएँ

1. अपन पना पीने में है आत्मीयता (5)
6. गर्मी और नमी से पैदा होने वाली स्थिति जिसमें पसीना आता है (3)
7. एक किलो से कुछ अधिक एक तौल की इकाई (2)
8. जानकारी होना, जागे होने और सचेत होने का भाव (5)
10. उल्टे नमक में वह जो ,सबके पास, होता है, इच्छा (2)
11. कॉपी या नोटबुक भी हो सकता है और बैंक का अकाउंट भी (2)
13. पानी को काटते हुए आगे बढ़ता यानी (3)
14. चहलकदमी में ढूँढो कण्ठ (3)
15. ताक . . . धिन, तबले का एक बोल (2)
17. समूह (2)
18. बेतार रेडियो या आसमान की आवाज़ (5)
20. पूर्व दिशा (2)
21. 'यहाँ बया रहती है' में ढूँढो हवा (3)
23. वह सागर जिसे स्वेज नहर भूमध्य सागर से जोड़ती है (2,3)

संकेत : ऊपर से नीचे

2. थपकी में रास्ता (2)
3. आप तंग न हो' में वह चीज़ जो तुम उड़ाते हो (3)
4. माँ के प्यार का भाव (3)
5. 'जैसी करनी वैसी भरनी' वाले मुहावरे का ही एक और रूप (2)
6. हट उस ताक से दूर' में बोरियत या मन उचटने का भाव (5)
8. प्राण (2)
9. सूखा या अनात्मीय व्यवहार (2)
10. वोट डालने का हक (5)
12. छोटी-छोटी ग़लतियाँ निकालना (5)
16. नष्ट (2)
17. हुनरमंद व्यक्ति (2)
18. दूसरे देश से सामान मँगवाना (3)
19. बहुत चुलबुल, चटर-पटर करने वाले या फिर वात रोग से पीड़ित (3)
22. नस (2)

निर्मल कुमार गोयल , पटना, बिहार द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली - 99 का हल चकमक के दिसंबर, 99 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का दिसंबर, 99 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

गड़बड़े और टेसू की धुन



दीपावली का नाम लेते ही पटाखों की आवाज़ कानों में गूँजने लगती है। ज़्यादा से ज़्यादा पटाखे फोड़ने की होड़ तुम सबने की होगी। यह मुकाबला कई बार दो मोहल्लों के बीच भी होता है। एक पूरी टोली साथ जमा हो जाती है और फिर दूसरी टोली से बाज़ी लगाती है। देर रात तक चलता है मुकाबला। लेकिन मुकाबले के लिए ढ़ेर सारे पटाखे भी तो चाहिए। इसलिए कई दिन पहले से ही तैयारियाँ होने लगती हैं। गुजरात, राजस्थान और मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में तो बच्चे सारे खेल भूल जाते हैं। इस समय सिर्फ एक ही खेल चलता है, लड़कों के बीच टेसू और लड़कियों के बीच गड़बड़ा।

इन दोनों खेलों की तैयारी मज़ेदार होती है। दोनों के लिए गीत हैं लेकिन अलग-अलग। टोलियाँ गाती हुई मोहल्ले के हर दरवाज़े पर जाती हैं। वहाँ पहुँचते ही गीत शुरू होता है। गीत तब तक चलता है जब तक कि वहाँ से चंदा नहीं मिल जाए।

टेसू और गड़बड़े की टोली में भिड़ंत भी होती है। दोनों की कोशिश होती है कि आमना-सामना न हो। अगर भिड़ंत हुई तो टोलियाँ एक दूसरे के गड़बड़े या टेसू को तोड़ देने की कोशिश करती हैं।

गड़बड़ा या झाँझी

इसको लड़कियाँ बनाती हैं। एक मटकी लेकर उसके बीच में चारों ओर छोटे-छोटे छेद कर लिए जाते हैं। मटकी पर चूना पोत दिया जाता है और उसके ऊपर रंग-बिरंगे बेल-बूटे बनाए जाते हैं। मटकी के बीच में कंडे की थोड़ी-सी राख रखी जाती है, उस पर जलता हुआ दिया। ऐसे तैयार होता है 'गड़बड़ा' या 'झाँझी'।

इसको लेकर टोली हर शाम को निकलती है, कुछ इस तरह गाते हुए –

गड़बड़ गड़बड़ लाड़ी लो
सेरी भागी जायके बाई को गड़बड़ो
सेरी लागी काँटो ला
नउआ के घर जायके बाई को गड़बड़ो
नउआ दीनी नेहरनी
बंसोड़ा दीनी छाबड़िया
माली के घर जाए के
माली दीना फूलड़ा



देव चड़ावन जाए के
देव ने दीना लाडू ला
मगरा बैठे खाई के बाई को गड़बड़ो
मगरे लागा उँदरा (चूहा)
कोने लग गई घूस के बाई को गड़बड़ो



टेसू

इसमें लड़के शामिल होते हैं। बाँस की तीन खपच्चियाँ को बीच से बाँधकर डमरूनुमा आकृति बनाई जाती है। इस आकृति के एक ओर की खपच्चियों पर टेसू का सिर और हाथ बनाए जाते हैं। मिट्टी सूख जाने पर रंग से कान, नाक, आँख, मुँह तथा हाथ-पैरों की उँगलियाँ बनाई जाती हैं। हाथों पर या खपच्चियों के जोड़ पर दिया जलाया जाता है।

कुछ इलाकों में एक हाथ पर हुक्का और दूसरे में फूल बनाया जाता है। कुछ इलाकों में हाथों की जगह टेसू के दो सिपाही बनाए जाते हैं। कई जगहों पर लड़कों की टोली खुद इन्हें बनाती है। कुछ जगह पर बाज़ार से ही बना बनाया टेसू खरीद लिया जाता है।

फिर उत्साह से भरी 'टेसू टोली' शिकार पर निकलती है। शिकार यानी चंदा उगाही। इस टोली का गीत कुछ ऐसे होता है –

मेरा टेसू यहीं अड़ा
खाने को माँगे दहीबड़ा
दही बड़े से पूछे बात
कह दे बेटा मन की बात
आगरे के टेकरे से
लड़की सुनार की
उसके भूरे-भूरे बाल
उसकी नथनी हजार की
सोने के कर्णफूल
सोने की आरसी
अपने-अपने महलों में ढोलकी बजाती
ढोलकी की तान अपने यार को सुनाती
यार का दुपट्टा सारे शहर की निशानी
माँगों रे लड़को आई दिवाली
रेल चली भई रेल चली
रेल चली है खटके से
चवन्नी निकालो मटके से

यह गाना मुहल्लेवालों के दरवाज़े पर तब तक चलता है जब तक की चंदा नहीं मिल जाता। कुछ जगहों पर टेसू टोली जैसे ही पहुँचती है, पहले दो पंक्तियाँ सुनाती है –

टेसू आए घर के द्वार
खोलो रानी चंदन किवार...



कहीं-कहीं चंदे के लिए ज़ोर देने के लिए यही गीत इस तरह गाया जाता है –

टेसू मेरा यहीं अड़ा
खाने को माँगे दहीबड़ा
दहीबड़े ने पूछी बात
कितने लोग तुम्हारे साथ
एक सौ अस्सी नौ हजार

हालाँकि टेसू टोली ऐसे मौके चुनती है कि घर के लोग चंदा देने से मना नहीं करें। मान-मनोव्वल हिला-हुज्जत भी चलती है। गीतों को बदल-बदल कर मनुहार की जाती है –

टेसू की मर गई नानी
नानी की थी बिल्ली
बिल्ली बड़ी चिबल्ली
बिल्ली खाए बर्फी
बर्फी में लगी पन्नी
दे दो एक चवन्नी

इतनी मनुहार पर भी कोई नहीं मानता है तो फिर अगले दिन का वादा करके टोली आगे बढ़ जाती है। यह दौर दिवाली के दिन तक चलता है।

अंतिम दिन गड़बड़ा और टेसू को तोड़ दिया जाता है। यह गाँव या मुहल्ले के बाहर होता है। कुछ जगह इनका अधूरा विवाह भी कराया जाता है। चंदे में आए पैसों से पटाखे और मिठाइयाँ खरीदी जाती हैं और इसका आनन्द टोली के सभी बच्चे लेते हैं। इसके साथ कई तरह की किंवदंतियाँ भी जुड़ी हैं।

कथा-किंवदंती तो अपनी जगह हैं, इन दिनों में बच्चों के सारे खेल बन्द हो जाते हैं। जिधर देखो उधर गड़बड़ और टेसू की धुन गूँजती रहती है।

तुम इसे कैसे खेलते हो। तुम्हारे यहाँ कोई दूसरा खेल या गीत है क्या? लिखना।

प्रस्तुति : राकेश जैमिनी
चित्र : 'सफ़रनामा' से साभार

लिखो, किसने क्या कहा?

यहाँ तीन चित्र दिए गए हैं उनमें संवाद तुम्हें भरने हैं। सोचो क्या बातचीत हो रही होगी। 1,2,3 नम्बर लिखकर संवाद हमें लिख भेजो। चुने हुए संवादों को चकमक के अगले किसी अंक में छापेंगे।

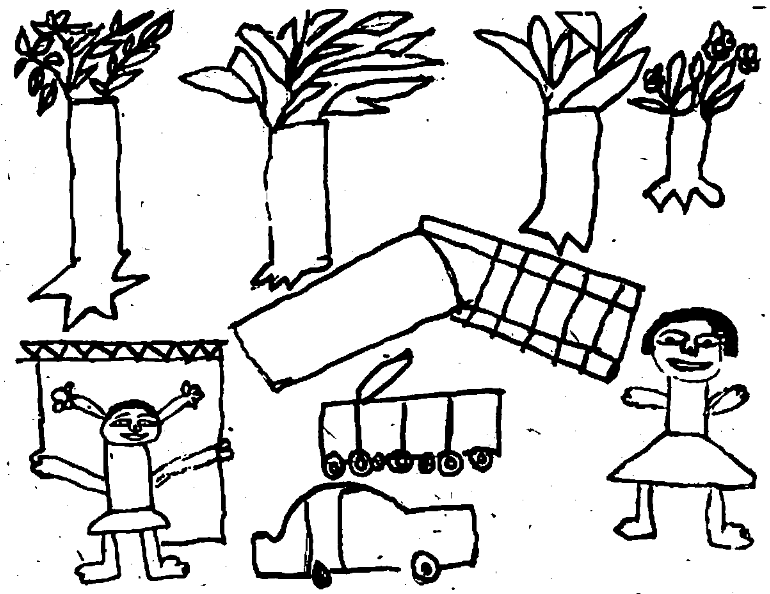


चित्र : इंदरमन साहू, छत्तीसगढ़, म. प्र.

पैदल स्कूल गए

एक बार की बात है कि मैं और मेरी सहेली, प्रिया स्कूल जा रहे थे कि बस नहीं आई। तो मैंने कहा कि प्रिया हम पैदल चलते हैं। तो प्रिया बोली, नहीं मुझे डर लगता है। मैंने कहा कि डर किस बात का लगता है, वहाँ कोई डर नहीं। मैं और प्रिया पैदल स्कूल चल दिये। रास्ते में दो साइकिल सवार लड़के मिले। वे मेरी कक्षा के थे। मैंने कहा, भैया मुझे स्कूल तक छोड़ दो। वे लोग हम लोगों को स्कूल तक छोड़ आए। कक्षा में गुरुजी ने पूछा, इतनी देर कैसे हो गई। मैंने गुरुजी को सारी बात बता दी। तो गुरुजी बोले कि अब ऐसी गलती कभी न करना। उस दिन से हम समय पर स्कूल जाने लगे थे।

● राजकुमार, छठवीं, मढ़देवरा, छतरपुर, म.प्र.



● नगमा, जसौंदी, बुरहानपुर, खंडवा, म. प्र.

पर्स चोरी गया

एक दिन में बाज़ार से सब्जी खरीद रहा था। मैंने एक किलो मटर खरीदी और पैसे देने के लिए जेब में हाथ डाला। लेकिन जेब में पर्स नहीं था। मैं घबड़ा गया। मैंने सब्जी वाले से कहा कि यहाँ मेरा थैला रखा है, मैं तुम्हारे पैसे देता हूँ।

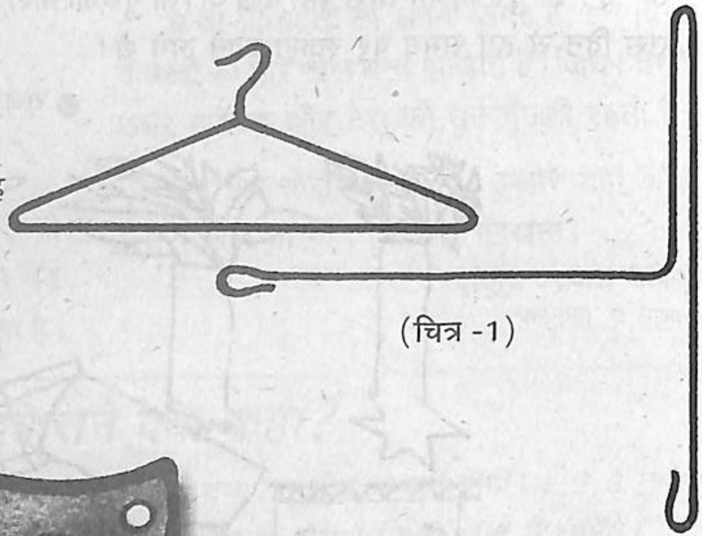
मैं सड़क पर पर्स देखने लगा। लेकिन पर्स नहीं मिला। अचानक ही एक छोटा सा लड़का दौड़ते हुए मेरे बगल से निकल गया। उसके हाथ में पर्स था। वह मेरा ही था। मैंने उसका पीछा किया। वह लड़का एकदम से रुक गया। मेरी सायकिल तेज़ रफतार में थी। इसलिए मैं ब्रेक नहीं लगा पाया और सायकिल से उसकी टक्कर लग गई। वह गिर पड़ा। उसके पैर में चोट आ गई। मैंने उसे चाँटा मारा और पर्स उसके हाथ से छीन लिया। मुझे उस लड़के पर दया आ गई। पास में डॉक्टर की दुकान थी। मैंने उसकी मल्हमपट्टी करवाई। और कहा – कभी भी चोरी मत करना। मैंने वापस आकर मटर वाले को पैसे दिए और घर की ओर चल पड़ा।

● सोहित अग्रवाल, छठवीं, नौगाँव, छतरपुर, म. प्र.

उड़ती हुई चिड़िया

इस तरह की चिड़िया बनाने के लिए तुम्हें पोस्टकार्ड जैसा मोटा काग़ज़ चाहिए। पोस्टकार्ड भी चलेगा। पतला, मज़बूत धागा और कपड़े टाँगने का पुराना हेंगर। अगर हेंगर न मिले तो मोटा तार ले सकते हो। दो-एक रबर-बैंड, रंग, कैंची भी ले लो।

सबसे पहले हेंगर को खोलकर चित्र में दिखाए आकार का कर लो। अगर हेंगर नहीं है तो मोटे तार को मोड़कर इस तरह बना लो। (चित्र -1)



(चित्र -1)



(चित्र -2)

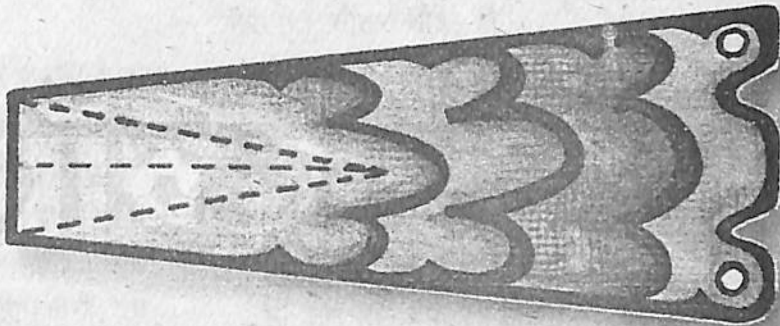
अब पोस्टकार्ड से चिड़िया के आकार को काटकर अलग कर लो। चित्र में दिखाई गई जगहों पर दो छेद भी बना लेना। (चित्र -2)

पोस्टकार्ड से ही चित्र -3 की तरह के आकार के दो पंख काट लो। इन पंखों में भी नुकीले सिरे पर एक-एक छेद कर लो।
इन पंखों में चौड़े हिस्से पर दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाकर चिड़िया के शरीर के साथ गोंद से चिपका दो।



(चित्र -3)

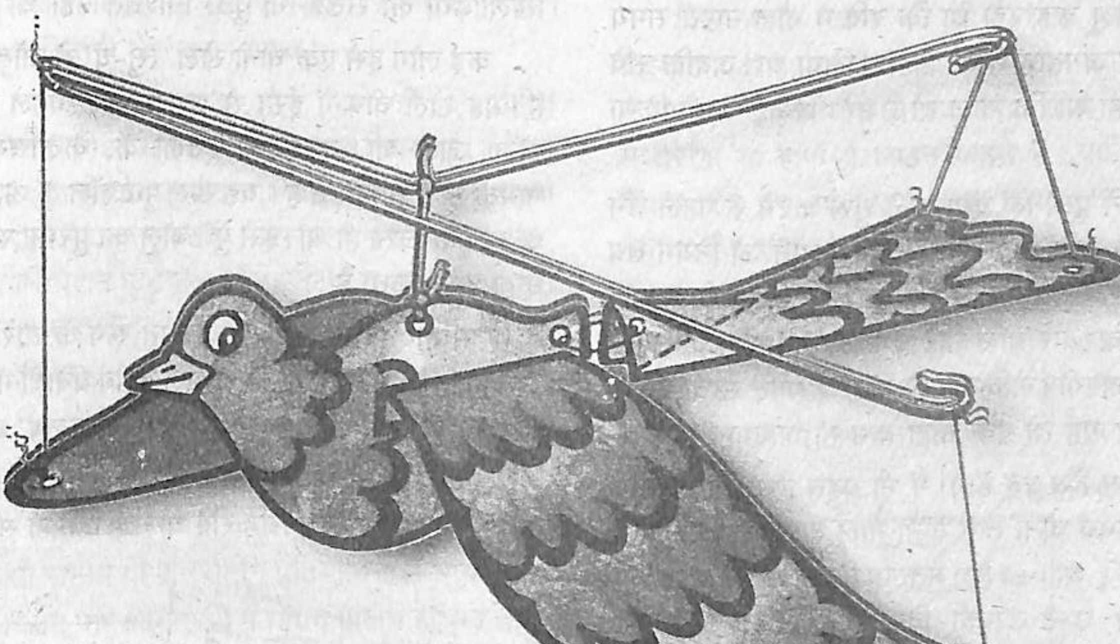
चिड़िया की पूँछ के लिए चित्र में दिखाई गई आकृति को काट लो। आकृति काटने के बाद उसमें भी दिखाए अनुसार छेद बना लो। इस आकृति में जिस जगह टूटी रेखाएँ दिखाई गई हैं, वहाँ से मोड़ बना लो।



(चित्र -4)

चिड़िया का शरीर, उसके पंख और पूँछ सभी को अपने मन चाहे रंगों से रंग लो।

अब सबसे पहले तो चिड़िया का शरीर और पूँछ जोड़ना है। इसके लिए चिड़िया के शरीर का पिछला सिरा और पूँछ का वो सिरा जिस पर मोड़ बनाए थे, जुड़ेंगे। दोनों हिस्सों के दोनों सिरों पर बने हुए छेदों में एक धागा पिरोकर थोड़ा ढीला रखते हुए बाँध दो।



(चित्र-5)

चिड़िया के शरीर के दोनों ओर पंखों को तो तुम पहले ही चिपका चुके हो। इसके बाद पंखों में बने छेदों में रबरबेंड पिरोकर हेंगर या मुड़े हुए तार में बाँध दो। रबरबेंड कहाँ, किस तरह बाँधने हैं इसके लिए चित्र-5 को ठीक से देखो। चिड़िया के शरीर के निचले हिस्से में बिल्कुल थोड़ी-सी मिट्टी चिपका दो।

सभी जगह ठीक से रबरबेंड बाँध लेने के बाद देखो तुम्हारी चिड़िया उड़ने को तैयार है या नहीं!

खेल दुनिया भर के

इस बार

फुटबॉल



प्रस्तुति : सुशील शुक्ला

मैं अभी घर पहुँचा ही था कि धम्म-धम्म की आवाज़ आई। छत पर जाकर देखा तो रवि व नीलू फुटबॉल खेल रहे थे। थोड़ी देर बाद रवि दौड़ता हुआ मेरे पास आया, 'देखो भैया नीलू चीटिंग कर रहा है। गोल हो जाने पर भी प्वाइंट नहीं मान रहा है।'

नीलू कह रहा था कि रवि ने गोल मारते समय पैर की जगह हाथ का सहारा लिया था। जबकि रवि कह रहा था कि गोल तो उसने 'किक' से ही किया था।

मैंने पूछा कि क्या खेल शुरू करने से पहले उन दोनों ने कुछ नियम बनाए थे। उन्होंने जो नियम तय किए थे, वे बड़े मज़ेदार थे। जो जिस खिलाड़ी के ओर की दीवार पर बॉल मार देगा उसे 1 गोल की बढ़त मिल जाएगी। लेकिन यदि बॉल 2 फीट ऊँची रेलिंग के पार गई तो एक गोल कम हो जाएगा।

तुम हँस रहे होगे! मैं भी बहुत हँसा था। क्योंकि उस समय दोनों टीम यानी नीलू व रवि का स्कोर 2 और –1 था। –1 का मतलब कि रवि ने गोल तो किए नहीं थे, उल्टे उसकी 'किक' से गेंद रेलिंग के पार चली गई थी।

ऐसे ही अजीब किन्तु रोचक नियमों के साथ खेला जाता है फुटबॉल, हर गली में। जितना बड़ा मैदान, वैसे ही नियम।

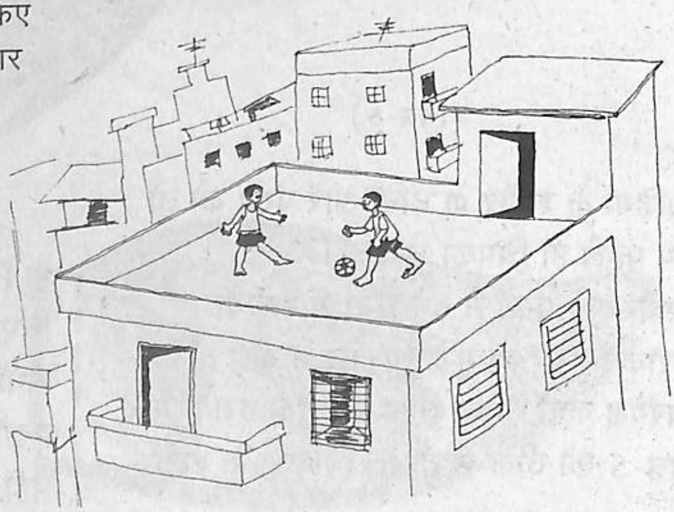
जब नियमों की बात निकली तो रवि और नीलू फुटबॉल के नियम जानने पर अड़ गए। यह प्रश्न भी आया कि फुटबॉल कैसे शुरू हुआ?

फुटबॉल के इतिहास के बारे में मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था कि यह प्राचीन समय में काफी जोखिम भरा और क्रूर खेल होता था। ऐसा भी माना जाता है कि रोमन सैनिकों को इस खेल का प्रशिक्षण दिया जाता था। और भी कई बातें, कि फुटबॉल चमड़े से बनाई जाती थी और अन्दर हवा की जगह बाल भरे जाते थे। मैदान कई एकड़ में फैला होता था। खिलाड़ियों की संख्या भी कुछ निश्चित नहीं थी।

कई लोग इसे एक चीनी खेल 'त्सु-चू' से जोड़ते हैं। यह खेल चीन में ईसा से 200 साल पहले से खेला जाता था। कुछ इसे इटली के 'कैलसियो' नामक खेल से जोड़ते हैं। यह खेल फुटबॉल के आज के रूप के जैसा ही था। इसे फुटबॉल का पुराना रूप कहा जा सकता है।

हम यदि फुटबॉल के व्यवस्थित रूप के बारे में बात करें तो इंग्लैंड में एक फुटबॉल क्लब बनाया गया 1857 में। इस क्लब का नाम 'शेफील्ड क्लब' था।

भैया, लेकिन आप तो हमें 'भारत में फुटबॉल कब शुरू हुआ' यह बताइए। यह रवि था। जो एक ही साँस



में सब कुछ जान लेना चाहता था।

रवि, सन् 1874 में कलकत्ता में फुटबॉल का पहला क्लब बना था – डलहौजी फुटबॉल क्लब।

आज तो पूरी दुनिया में फुटबॉल खेला जाता है। विश्वस्तर की कई प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। जिनमें पूरी दुनिया की जानी-मानी टीमें खेलती हैं। जब जगह-जगह इस तरह की प्रतियोगिताएँ होने लगीं, तब ही शायद यह भी विचार आया होगा कि ऐसी प्रतियोगिताएँ कौन करवाए, कौन इसके लिए नियम बनाए....। फिर 1904 में बनाया गया एक फुटबॉल संघ। नाम था ''फेडरेशन इंटरनेशनल दी फुटबॉल एसोशियेशन'। संक्षिप्त में इसे 'फीफा' कहते हैं।

फिर बने पूरे विश्व की फुटबाल प्रतियोगिताओं के लिए नियम। बॉल कैसी हो? मैदान कितना बड़ा हो, गोल की लम्बाई-चौड़ाई कितनी हो। खेलने के नियम। खेल कितनी देर चले। आदि।

अच्छा एक बात और, भले ही अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में इस खेल के कुछ नियम हों। लेकिन फुटबॉल इसके अलावा भी कई रूपों में खेला जाता है। जैसे गैलिक फुटबॉल, आस्ट्रेलियन रूल्स फुटबॉल, एसोसियेशन फुटबॉल और एक वो तुम्हारा वाला छत वाला फुटबॉल। जो भारत में खेला जाता है वह एसोशिएयन फुटबॉल का रूप है।

हाँ, तो हम बात कर रहे थे 'फीफा' के द्वारा तय किए गए नियमों की।

वैसे तो इन नियमों की जरूरत तभी होगी जब तुम किसी राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग ले रहे हो। आम प्रतियोगिताओं में नियम अलग हो सकते हैं।

बॉल के बारे में मापदंड है, कि इसकी परिधि 68 सेंटीमीटर से 71 सेंटीमीटर के बीच होना चाहिए। और वजन 398 से 453 ग्राम।

मैदान के बारे में भी कुछ नियम हैं। मैदान की लम्बाई 91 से 120 मीटर के बीच और चौड़ाई 45 से 91 मीटर के बीच कुछ भी हो सकती है। यानी मैदान कम से कम 91 मीटर लम्बा और 45 मीटर चौड़ा हो और अधिक से अधिक 120 मीटर लम्बा और 91 मीटर चौड़ा हो।

मैंने कहा कि चलो आज हम उन्हीं नियमों से फुटबॉल खेलते हैं, जिनसे तुम्हारे पसंदीदा खिलाड़ी फुटबॉल खेलते हैं।

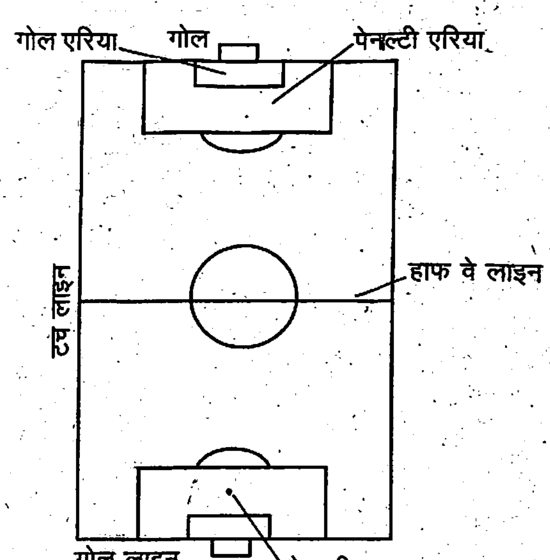
लेकिन भैया हमारी छत तो बहुत छोटी है फिर हम उन नियमों से कैसे खेल पाएँगे?

हाँ, तुम सही कह रहे हो लेकिन इस तरह से तुम इन नियमों को समझ तो पाओगे।

हमने छत पर चॉक से पहले दोनों तरफ एक-एक गोल बनाया। गोल के आगे दो और लाइनें खींची जैसा कि चित्र में दिखाया है। यदि तुम लगभग 100×100 मीटर के मैदान में खेलो तो चित्र के सहारे तुम खुद ऐसी रेखाएँ खींच सकते हो और फुटबाल का मैदान बना सकते हो।

फिर हमने मैदान की सीमा रेखा बनाई जो बिल्कुल एक आयत जैसी थी। पूरे मैदान को लम्बाई में नापकर इसके बीच से एक रेखा खींच ली। इसे मध्यरेखा या हाफ-वे लाइन कहते हैं। यानि आधा मैदान और एक गोल एक तरफ तथा दूसरा आधा मैदान और एक गोल दूसरी तरफ।

अब यह बता दूँ कि इस मैदान में कहाँ क्या है। सबसे पहले मैदान की रेखाएँ चारों ओर की। इन्हें टच लाइन या बाऊंड्री लाइन कहते हैं। बड़ी-बड़ी प्रतियोगिताओं में इन लाइनों पर दोनों तरफ दो



लाइन्समैन खड़े रहते हैं। इनका एक काम होता है बॉल को बाऊंड्री के बाहर से उठाना तथा दूसरा इस बात का ध्यान रखना कि गेंद किस खिलाड़ी के किक या हेड के द्वारा लाइन के पार गई या नहीं। ये दोनों लाइन्समैन रेफरी को बताते हैं कि गेंद लाइन को सिर्फ छूकर लौटी या बाहर गई, यानि फाउल हुआ।

इसका मतलब कि फुटबाल में तीन रेफरी होते हैं भैया, रवि बोला।

नहीं रवि, रेफरी तो एक ही होता है। ये लाइन्समैन तो सिर्फ रेफरी को जानकारी देते हैं। इनकी सलाह या जानकारी रेफरी माने या न माने। लेकिन इसी जानकारी के आधार पर रेफरी फैसला करते हैं।

वैसे तो गोल क्षेत्र की लम्बाई होती है लगभग साढ़े अठारह मीटर, यानि 20 गज और गोल की लगभग सवा सात मीटर। यानी 8 गज। गोल क्षेत्र पेनाल्टी क्षेत्र से घिरा होता है। लेकिन तुम इसे अपने मैदान के हिसाब से बना सकते हो। चित्र की सहायता से मैदान की बाकी नाप-जोख कर सकते हो।

फुटबॉल में दोनों टीमों में गोलकीपर सहित 11-11 खिलाड़ी खेलते हैं। वैसे यदि किसी खिलाड़ी को खेल के बीच में कहीं चोट लग जाए तो उसे अतिरिक्त खिलाड़ी से बदला जा सकता है। इस प्रकार के बदलाव अधिक से अधिक 5 हो सकते हैं। यानि अतिरिक्त खिलाड़ियों सहित एक टीम में खिलाड़ियों की कुल संख्या 16 होती है।

तुमने फुटबॉल मैच में तो देखा ही होगा कि गोलकीपर बाकी खिलाड़ियों से अलग पोशाक या ड्रेस पहने होता है। सिर में हेलमेट, ताकि तेज़ किक से उसे चोट न पहुँचे।

खेल दो सत्रों में होता है। 45 मिनिट के खेल के बाद 5 मिनिट का विश्राम दिया जाता है और फिर दूसरी बार खेल शुरू होता है। यानि फिर 45 मिनिट। हाँ एक हाफ के बाद, यानी खेल के एक भाग के बाद, दोनों टीमें अपना साइड (मैदान) बदल लेती हैं।

चलो अब खेलते हैं। मैंने एक सिक्का निकाला और कहा कि कौन-सी टीम पहले किक करेगी इसके लिए टॉस होता है। जो टीम टॉस जीतती है वही पहले किक करती। टॉस नीलू ने जीता। लेकिन फिर समस्या यह थी कि मैं किस टीम से खेलूँ। वे दोनों ही मुझे अपनी-अपनी टीम से खिलाने की ज़िद कर रहे थे।

आखिर में तय हुआ कि मैं रेफरी बनूँ और रवि और नीलू खेलें।

नीलू ने किक लगाई और गेंद आगे बढ़ाते हुए रवि के गोल की तरफ ले जाने लगा। नीलू ने गोल के सामने जाकर फिर से तेज़ किक दागी और गेंद गोल में पहुँचने से पहले ही सीमा रेखा को पार कर बाहर चली गई। मैंने खेल रोका और बताया कि पहली बात यह कि जब टीम पूरे ग्यारह खिलाड़ियों से खेलती है, तो जो खिलाड़ी किक मारता है वह दुबारा तब तक किक नहीं मार सकता है, जब तक कि कोई दूसरा खिलाड़ी गेंद को किक न करे या उसे छू न ले। यह हर बार तब होता है जब खेल में कोई अड़ंगा हुआ हो, या फाउल हो गया हो आदि।

दूसरी बात यह कि जब गेंद मैदान के बाहर जाती है तो उसे वापस मैदान में लाने के भी कुछ नियम हैं। यह इस पर निर्भर करता है कि गेंद मैदान के किस क्षेत्र से बाहर गई है। तथा क्या बाहर जाने से पहले भी कोई नियम तोड़ा गया है?



जब सीमा रेखा के बाहर से गेंद अंदर किक करते हैं तो उसे थ्रो इन कहा जाता है। गेंद सीमा रेखा के जिस भाग से बाहर जाती है, उसी भाग से अंदर फेंकी जाती है। थ्रो करते समय खिलाड़ी का अगला पैर सीमा रेखा पर या कुछ पीछे रखकर गेंद दोनों हाथों से पकड़कर सिर के ऊपर से लाते हुए ही थ्रो करना होता है।

इसके बाद दोनों ने बारी-बारी से गेंद को थ्रो इन करके देखा। मान लो यदि तुम में से कोई इसे नियम के अनुसार नहीं फेंक पाया तो फिर विरोधी खिलाड़ी को मौका दिया जाता है।

यदि गेंद गोल लाइन से बाहर गई हो तो (गोल लाइन चित्र में देखो, गोल वाले हिस्से में) गोल किक से खेल शुरू होगा।

यह गोल किक तभी मिलेगी, जब गेंद जो टीम उसे आगे बढ़ा रही थी उसके खिलाड़ी को छूकर बाहर गई हो। गोल किक विरोधी टीम का गोलकीपर या कोई अन्य खिलाड़ी ले सकता है।

भैय्या, मान लो गेंद रक्षक टीम के खिलाड़ी को छूकर बाहर गई हो तो? रवि ने पूछा।

इसके लिए भी नियम हैं। ऐसी स्थिति में आक्रामक टीम को कार्नर किक मिलता है।

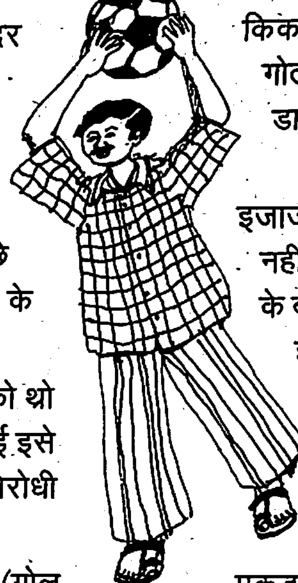
ऐसी स्थिति में तो सारी आक्रामक टीम एक साथ मिलकर गोल कर ही देती होगी। बड़ी देर बाद नीलू ने सवाल किया।

हाँ, लेकिन इसके लिए भी नियम हैं।

किक से पहले आक्रामक टीम के सभी खिलाड़ी गेंद से कम से कम 10 गज की दूरी पर होने चाहिए।

यह तो हुए गेंद मैदान से बाहर जाने के समय के नियम। गेंद मैदान के अंदर ही रहे और कोई नियम टूटे तो। इसके लिए भी अलग-अलग क़ायदे हैं।

पहले फ्री किक के बारे में जान लें, तो हमें बाकी नियम जानने में आसानी रहेगी। यह जहाँ नियम टूटे या फ़ाउल हो वहीं से ली जाती है। यह दो तरह की होती है। एक डायरेक्ट किक और दूसरी इनडायरेक्ट किक। जब रेफरी किसी खिलाड़ी को सीधे गोल करने की अनुमति देता है तो वह डायरेक्ट किक होती है।



जब रेफरी इनडायरेक्ट किक की इजाजत देता है तो कोई भी खिलाड़ी सीधे गोल नहीं कर सकता। यानि उसके किक करने के बाद जब दूसरे खिलाड़ी ने उसे खेल दिया हो तभी उसे गोल में बदला जा सकता है।

भैय्या, हम एक बार यह करके देखते हैं। नीलू ने गेंद सीधे ही किक कर दी और गोल हो गया। फिर रवि ने किक किया लेकिन नीलू ने हाथ से पकड़कर गोल बचा लिया। इस पर रवि को ऐतराज था कि 'नीलू ने गेंद हाथ से क्यों पकड़ी।'

थ्रो तो सभी हाथों से करते हैं। इसके अलावा गोलकीपर ही अकेला ऐसा खिलाड़ी होता है जिसे अपने हाथों या बाजू से गेंद खेलने की इजाजत होती है। लेकिन वह भी सिर्फ अपने गोल क्षेत्र के अन्दर ही। बाकी खिलाड़ी गेंद रोकने, उसे काबू करने, उसके साथ आगे बढ़ने, पास देने या गोल करने में हाथों को छोड़कर शरीर के किसी भी हिस्से का इस्तेमाल कर सकते हैं।

डायरेक्ट फ्री किक के समय यदि रक्षक टीम का कोई खिलाड़ी पेनाल्टी क्षेत्र में ऐसा फाउल करता है जिससे किक में बाधा पहुँची हो, तो उसकी टीम के विरुद्ध पेनाल्टी किक का दण्ड दिया जाता है।

पेनाल्टी किक, पेनाल्टी बिन्दु से ली जाती है। तब गोलकीपर और पेनाल्टी किक लगाने वाले खिलाड़ी के अलावा, बाकी सभी खिलाड़ी पेनाल्टी क्षेत्र से बाहर खड़े होते हैं।

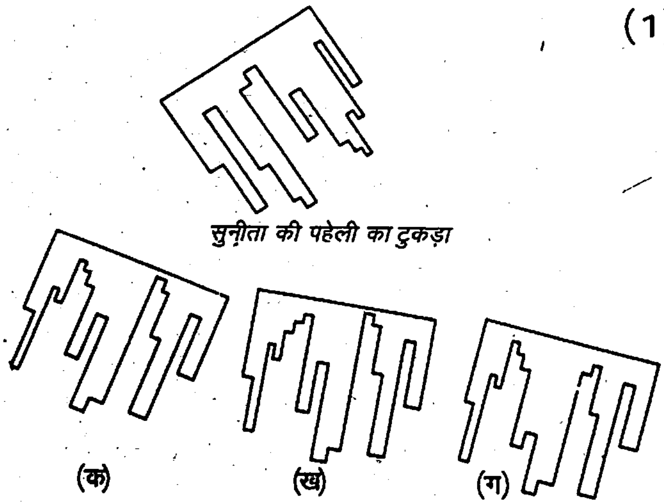
तो ये रहे फुटबॉल के सामान्य नियम। जिनसे तुम फुटबॉल खेल सकते हो। यदि खेलते समय कोई नई स्थिति बन जाए और तुम्हें उसके बारे में नियम मालूम नहीं हो तो अपने बड़े भाई-बहनों या अन्य किसी फुटबाल के जानकार से पूछना। यदि तुम्हारी समस्या का समाधान तब भी नहीं होता है तो तुम हमें लिखना।

सभी चित्र : शिवेन्द्र पांडिया



माथापच्ची

(1)



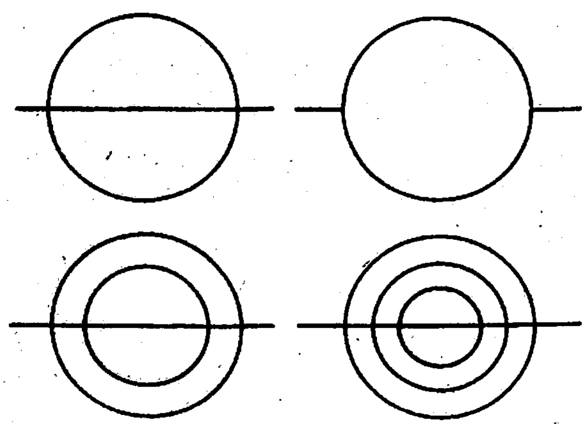
सुनीता की पहेली का टुकड़ा

सुनीता ने एक चौकोर कागज़ से काटकर एक जिग्सॉ पहेली बनाई। उसकी पहेली को देखकर अनीता और बाली ने भी अपनी-अपनी पहेलियाँ बनाईं। खेलते-खेलते सुनीता की पहेली का एक हिस्सा अनीता और बाली की पहेलियों के टुकड़े से मिल गया। अब पहचानो कि सुनीता की पहेली के ऊपर वाले टुकड़े का दूसरा हिस्सा कौन-सा है?

(2)

***त्रिभुज** के तीनों कोणों का योग 180° होता है लेकिन यदि त्रिभुज के तीनों कोणों को एक-एक रेखा द्वारा दो भागों में बाँट दिया जाए तो उसी बड़े त्रिभुज के दो-दो भागों में बँटे तीनों कोणों का योग कितना हो जाएगा।*

(3)



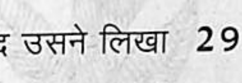
तुमने पेंसिल उठाए बिना ऐसी कई आकृतियाँ बनाई होंगी जिनमें किसी भी लाइन पर दुबारा पेंसिल नहीं आती है। यहाँ भी यही करना है, पेंसिल उठाए बिना इन आकृतियों को बनाने की कोशिश करो।

लेकिन इनमें से एक आकृति ऐसी है जो इस तरह से, यानी पेंसिल उठाए बिना नहीं बन सकती। वो कौन-सी आकृति है ढूँढो। उसे ढूँढने के लिए सभी को बनाकर तो देखना ही पड़ेगा न!

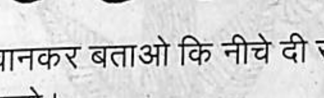
(4)

मीना ने 1 से 9 तक के अंकों की सूरतें बनाईं। इन सूरतों से उसने कुछ संख्याएँ लिखीं।

उसकी पहली संख्या है **481**



इसके बाद उसने लिखा **2963**



अब तुम पहचानकर बताओ कि नीचे दी संख्याएँ क्या हैं! कोशिश करो।





(5)

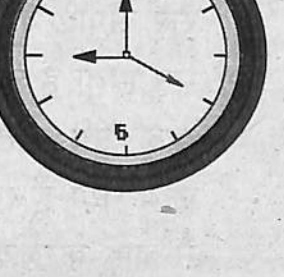
एक भवन की तीसरी मंजिल पर एक कक्षा में टीचर ने बच्चों से कहा कि क्या उनमें से कोई विद्यार्थी इस खिड़की से नीचे कूद सकता है। सभी डर गए लेकिन उनमें से एक ने वह कर दिखाया और उसे चोट भी नहीं आई। क्या तुम बता सकते हो कि वह कैसे कूदा?

(6)

यदि हम अंतरिक्ष से पृथ्वी को देखें, तो हमें एक ऐसी चीज़ भी दिखती है जो प्राकृतिक नहीं है यानि मानव ने खुद इस पृथ्वी पर बनायी है क्या तुम इस आकृति के बारे में बता सकते हो कि यह किसकी है और पृथ्वी पर कहाँ है?

(7)

***घड़ी** उन वस्तुओं में से है जिनकी ज़रूरत हमें रोज पड़ती है। नौ बजे की स्थिति में घंटे व मिनिट का काँटा 90 डिग्री का कोण बनाते हैं। अब करके देखो और बताओ कि 12 घंटे में ऐसी स्थितियाँ यानि समकोण वाली स्थितियाँ कितनी बार आती हैं।*



(8)

एक 144 वर्ग मीटर क्षेत्रफल वाला वृत्ताकार मैदान है। इस मैदान में एक गाय को कम से कम कितनी लम्बी रस्सी से बाँधा जाए कि वह मैदान के हर भाग की घास तक पहुँच सके।



(9)

ये तो तुम जानते ही हो कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। पृथ्वी की इसी गति के कारण दिन व रात होते हैं। इस गति को दैनिक गति कहते हैं। क्या तुम बता सकते हो कि पृथ्वी किस रफ्तार से अपने अक्ष पर घूमती है?



मुझे सिखा डग भरना

कहा पेड़ ने ओ री चिड़िया
सिखा मुझे उड़ना।
मानूँगा आभार बता दे
मुझको डग भरना॥

मेरे भी हैं पंख
नहीं उड़ना मुझको आया।
एक पैर भी है लेकिन मैं
चल फिर न पाया।
ओ हिरनी आ पास
कुलाँचें सिखला दे भरना॥

मेरी भी इच्छा होती है
सैर सपाटे की।
मन होता है खाने को
इक रोटी आटे की।
ऊब गया हूँ खड़े खड़े
मैं चाहूँ कुछ करना॥

अच्छा ठीक, नहीं तेरे
बस में ये कर पाना।
मुझे सुना दे अपनी
यात्राओं का अफसाना।
समझूँगा मैं ही घूमा
बस्ती जंगल झरना॥

● शिवचरण चौहान
● चित्र : दुर्गा बाई



पाठक लिखते हैं

मई '99 के अंक में छपे चित्रेशजी के पत्र को पढ़कर मेरे ध्यान में जो भी विचार आए उन्हें आप तक पहुँचा रहा हूँ। सबकी सोच अलग-अलग प्रकार की होती है। सभी सुझावों से आप सहमत नहीं भी हो सकते हैं। अत: जो सुझाव अच्छे लगें उन पर विचार कर लें। शेष छोड़ दें।

1. चित्रकथा : इसे नियमित कर दें और प्रतिमाह छापें, कभी-कभी अनुदित चित्रकथा भी दें। (मौलिक व अनूदित का अनुपात 2:1 रख सकते हैं)

2. कहानी : प्रति माह एक अवश्य दें। (इनमें कोई एक सरल काव्यमय हो)

3. विज्ञान-कथा : प्रति एक माह छोड़कर छापें।

4. लघु नाटक : वर्ष में कुल तीन।

5. एकांकी : वर्ष में कुल तीन।

लघुनाटक, एकांकी व विज्ञान-कथा क्रमशः एक, एक, दो अनूदित भी होनी चाहिए। अनूदित में विदेशी भाषाओं के साथ-साथ भारत की अन्य भाषाएँ भी शामिल होनी चाहिए।

एक लघुनाटक व एक एकांकी सरल काव्यमय होना चाहिए।

6. कविताएँ : आयु के आधार पर सभी बच्चों का बुद्धि विकास एक जैसा नहीं होता है। वे अपने बौद्धिक विकास के आधार पर ही किसी कविता को समझ पाते हैं। बच्चों के लिए लिखी गई कविताएँ बड़ों को अच्छी लगती हैं, यह भी सच है। मैं चाहता हूँ कि हर आयु और बुद्धि-वर्ग के बच्चे को चकमक के प्रत्येक अंक में कम से कम एक कविता तो अवश्य मिलनी चाहिए। इसके लिए आपको प्रत्येक अंक में कम से कम पाँच कविताएँ तो अवश्य देनी होंगी।

विज्ञान कविता : कभी-कभी इन पाँच में से एक विज्ञान विषय पर भी आधारित होनी चाहिए। (साल में दो या तीन)

अनूदित कविता : इन पाँच में से प्रतिमाह एक अनूदित हो, जिसकी मूल भाषा विदेशी के साथ-साथ भारतीय भी हो।

7. पत्र : प्रतिमाह एक छापना प्रारंभ करें।

पत्र से मेरा तात्पर्य साहित्य के अन्तर्गत कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि विधाओं की तरह आने वाली 'पत्र-विधा' से है, जिसके माध्यम से बच्चे अपने विचार साहित्य की सरल भाषा का प्रयोग करके अपने मित्रों

व बड़ों तक पहुँचाएँ। पत्रों के विषय – मेरा गाँव, मेरा शहर, नया शहर, मेरा मित्र, मेरी नई सहेली, नया घर, नया स्कूल, आसपास घटी घटना, मेरा पालतू पशु या पक्षी इत्यादि किसी से भी संबंधित कुछ भी हो सकता है। बड़ों के द्वारा लिखे गए नितांत काल्पनिक व मौलिक पत्र भी आप छापें। पहले बड़ों द्वारा लिखे गए पत्र छापें। उसके बाद उनसे प्रेरणा लेकर बच्चे भी लिखेंगे।

● रावेन्द्र कुमार 'रवि', नैनीताल, उ.प्र.

मेरे एक मित्र ने आपकी ज्ञानवर्धक, सुन्दर पत्रिका मुझे पढ़ने को दी। निश्चय ही यह प्रयास प्रशंसनीय है। मेरे बच्चों को भी यह पत्रिका पसन्द आई है। मैंने अपने बच्चों को भी प्रेरित किया है कि वे अपनी रचनाएँ आपको भेजें।

सबसे बढ़िया बात जो इस पत्रिका में है वह है इसकी स्वच्छता। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं नज़र आया जो बच्चों के लिए भद्दा या हानिकारक हो। हिन्दी में ऐसे और प्रयासों की आवश्यकता है, विशेषकर विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में। एक सुझाव : एक या दो छोटे लेख कम्प्यूटर पर भी हों तो बुरा नहीं रहेगा। एक किसी भी खेल की पूरी जानकारी दे दी जाए तो कैसा रहेगा?

● दौलतराम जलोटा, प्रिंसीपल,
राधावाटिका सीनियर सेकन्डरी स्कूल, खन्ना, पंजाब

'चकमक' का जून '99 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की सम्पूर्ण पठन सामग्री रुचिकर है। यह पत्रिका काफी आकर्षक एवं ज्ञानवर्द्धक होने के साथ-साथ बच्चों का भरपूर मनोरंजन भी करती है।

पत्रिका में प्रकाशित वैज्ञानिक लेख व कविताएँ बच्चों के ज्ञान में बढ़ावा देते हैं।

आपकी पत्रिका से मेरा साक्षात्कार पहली बार हुआ। मैंने इसमें प्रकाशित लेखों को पढ़ा, तो काफी प्रसन्नता हुई कि आज के वैज्ञानिक युग में आप बच्चों के लिए विज्ञान से संबंधित बातें 'चकमक' द्वारा उन तक पहुँचा रहे हैं।

प्रस्तुत अंक में कई ऐसे आलेख पढ़ने को मिले जिनसे कई नई जानकारी मिलीं, उसका क्या खुलासा करूँ, वे तो सर्वविदित हैं। मेरी शुभकामना है कि 'चकमक' ''दिन-दूनी रात चौगुनी'' प्रगति करे।

● सीमा सुमन, ग़ाज़ियाबाद, उ.प्र

चकमक का अगस्त, 1999 अंक मिला। हार्दिक धन्यवाद। इसे पढ़ा। हिन्दी में बालोपयोगी विज्ञान पत्रिकाओं की कमी है। ऐसी दशा में चकमक का प्रकाशन प्रशंसनीय है। इस अंक में 'दिन में रात' नामक रचना बहुत ज्ञानवर्धक है। 'पप्पू होनहार' (शुक्ला चौधुरी), 'बूँदों का त्यौहार' (सुशील शुक्ला) आदि रचनाएँ बहुत सरस हैं।

● भागवत पाण्डेय, कठार, गाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश

यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

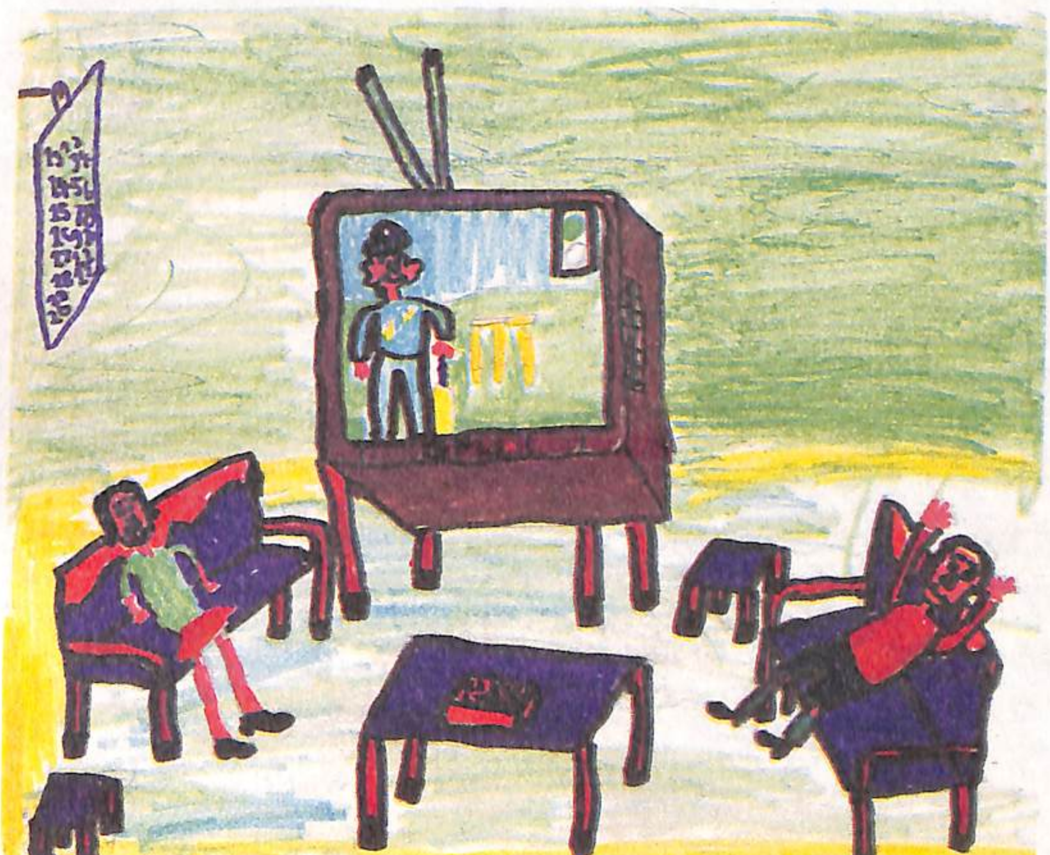
डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐



सम्पूर्णा बिस्वास, 6 वर्ष, नई दिल्ली

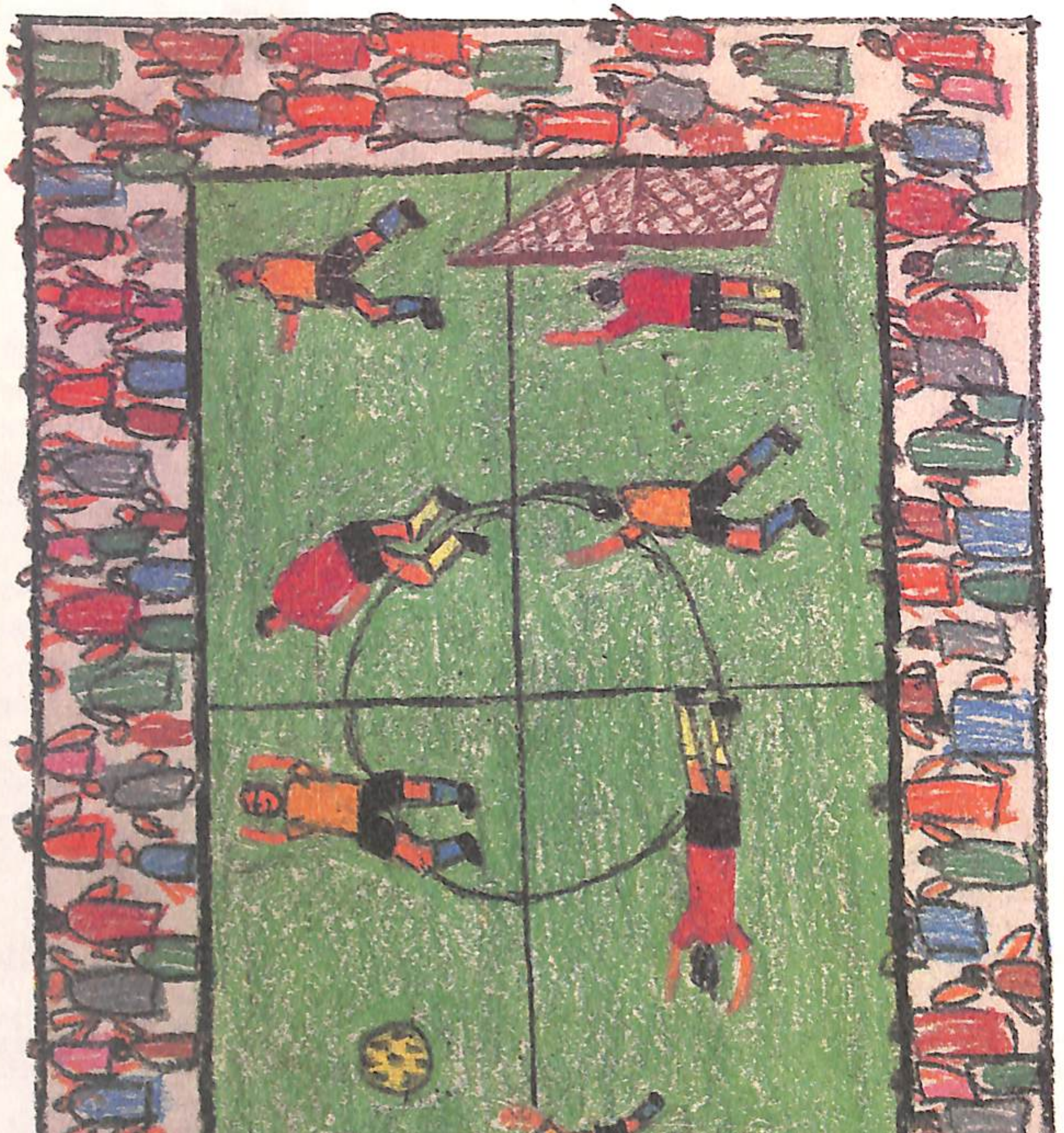


अम्बरीश दुबे, पहली, इन्दौर, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक MP-2/P-431/99



घनश्याम ए. सवाणी, दसवीं, भावनगर, गुजरात